RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 मार्च 2020

बाल विज्ञान पत्रिका, मार्च 2021

चकमक

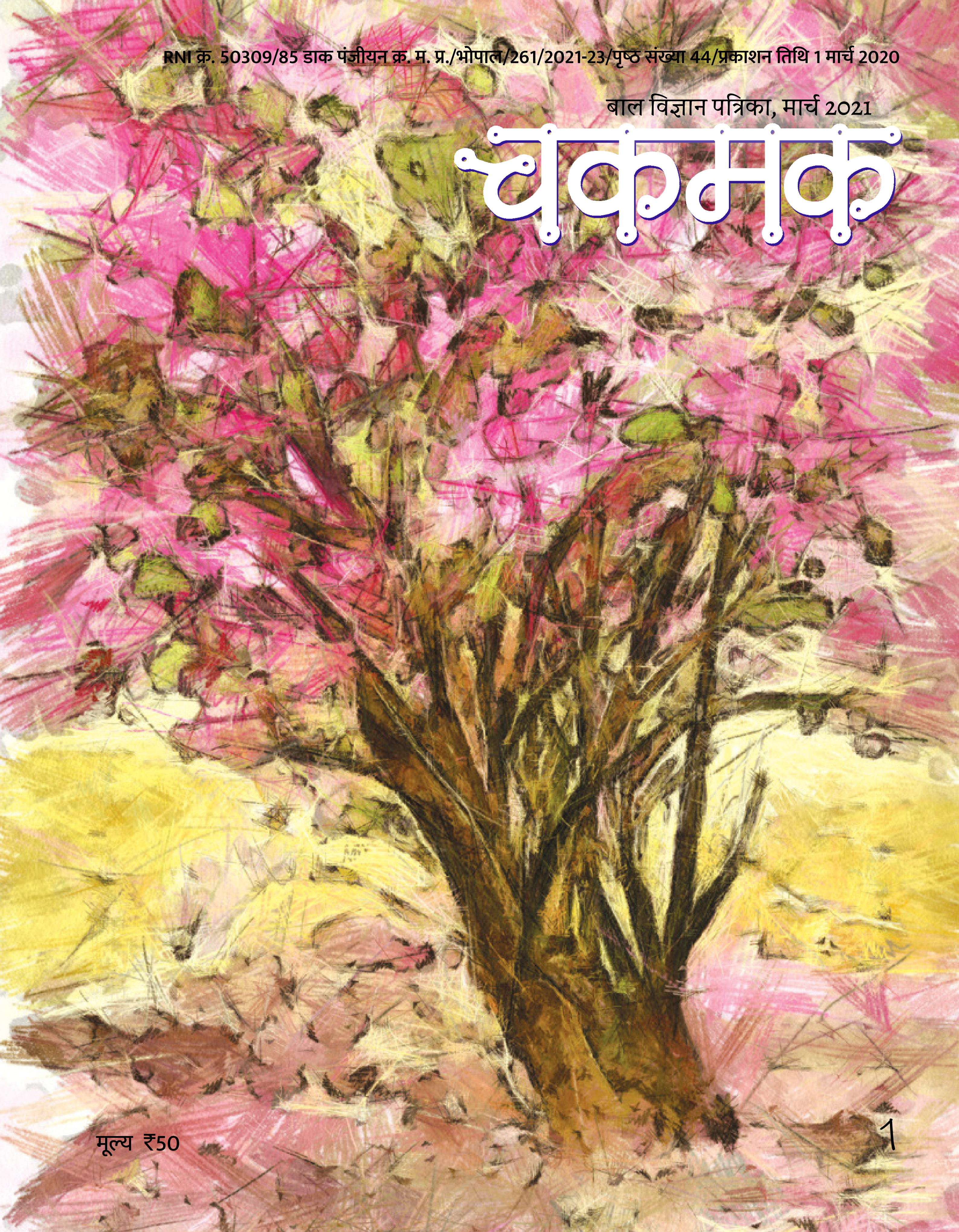

मूल्य ₹50

1

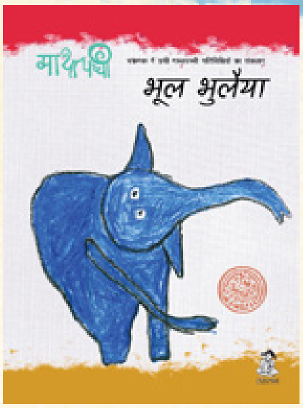

Parag Honour List 2021

चकमक के खज़ाने से निकली तीन किताबें 'पराग ऑनर लिस्ट, 2021' में

टाटा ट्रस्ट की पहल पराग द्वारा 'पराग ऑनर लिस्ट, 2021' जारी की गई है। सालाना प्रकाशित होने वाली इस सूची में बच्चों व किशोरों की अँग्रेज़ी और हिन्दी भाषा की बेहतरीन किताबों को शामिल किया जाता है और उनके बारे में संक्षिप्त जानकारी दी जाती है। बाल साहित्य क्षेत्र के विशेषज्ञों द्वारा ध्यानपूर्वक किए गए निरीक्षण और कई समीक्षाओं के बाद इसे तैयार किया जाता है, ताकि अच्छी गुणवत्ता वाले बाल साहित्य की एक व्यापक सूची तक पाठकों की पहुँच को बढ़ावा मिले।

इस लिस्ट में तीन ऐसी किताबें भी शामिल हैं जो *चकमक* से ही निकली हैं... इनमें शामिल सभी लेखकों और चित्रकारों को बहुत बधाई!

चित्र: किम्या नेहरा, दूसरी, मुम्बई, महाराष्ट्र, मार्च 2012

इन्हें मँगाने के लिए तुम चकमक के पते पर लिख सकते हो।

या 97530 11077 पर हमें फोन कर सकते हो या फिर chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in पर ईमेल भी कर सकते हो।

अंक 414 ● मार्च 2021

चकमक

इस बार

चकमक के खज़ाने से... - 2
नदी - नेहाभाई - 3
तालाबन्दी में बचपन - लॉकडाउन... - अंजलि - 4
बादलों का घर - मेघालय - गालिब कलीम - 7
बड़ों का बचपन - कमबख्त उम्र - प्रभात - 11
भूलभुलैया - 15
क्यों-क्यों - 16
शरीर का पानी गँवाकर खतरे में हाथी - 20
काश - नितिन कुशवाह - 21
चींटियों के बारे में - नेचर कॉन्ज़र्वेशन फाउंडेशन - 22
तुम भी जानो - 24
चूहे की रोटी - वृशाली जोशी - 25
खर्राटे लेने वाले गुस्से के नहीं... - सुशील जोशी - 27
लाड़कुंवर - पारुल बत्रा दुग्गल - 29
मेरा पन्ना - 32
माथापच्ची - 38
चित्रपहेली - 40
क्रेन - लाल्टू - 43
रीटा - रोहन चक्रवर्ती - 44

नदी

कविता व चित्र: नेहाभाई

पिछले दिनों पहाड़ गिरा,
बहुत से घर ढह गए!
मैंने नदी से पूछा -
तुझे चोट तो नहीं लगी ना?

आवरण चित्र: कनक शशि

सम्पादन
विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक
कविता तिवारी
सजिता नायर

सहायक सम्पादक
मुदित श्रीवास्तव

वितरण
झनक राम साहू

डिज़ाइन
कनक शशि

डिज़ाइन सहयोग
इशिता देबनाथ बिस्वास

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

एक प्रति : ₹ 50
वार्षिक : ₹ 500
तीन साल : ₹ 1350
आजीवन : ₹ 6000
सभी डाक खर्च हम देंगे

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य

फोन: +91 755 2977770 से 3 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in
वेबसाइट: https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine

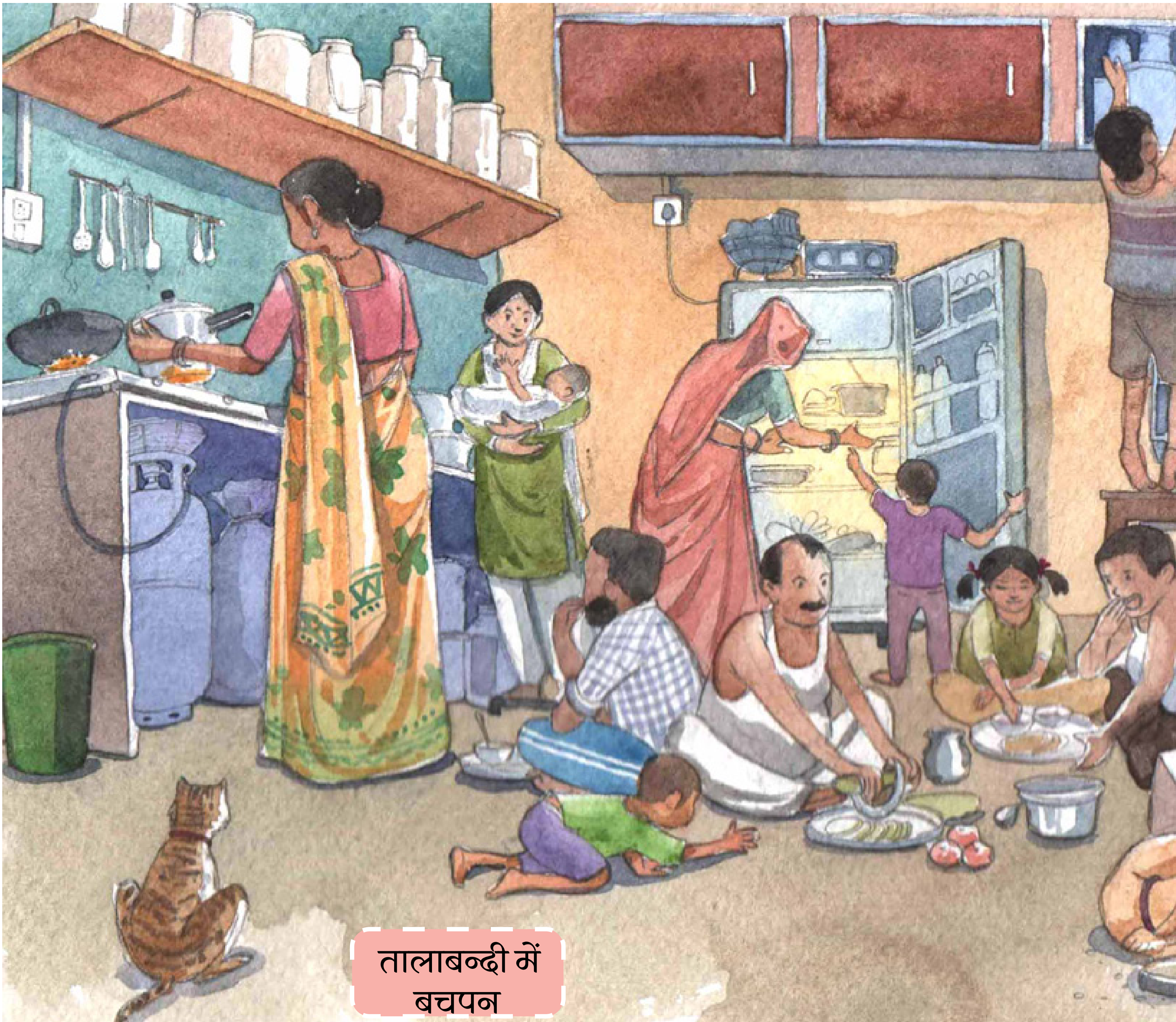

तालाबन्दी में बचपन

लॉकडाउन के वक्त – घर और बाहर

भाग - 1

घर

अंजलि
चित्र: शुभम लखेरा

तालाबन्दी के दौरान इस बाइस गुना बारह गज के घर में, सामान के साथ-साथ घर के लोग भी भीड़ जैसे ही लगते हैं। लॉकडाउन में साथ रहने की वजह से पूरा घर भरा-भरा लगता है। घर की लम्बाई-चौड़ाई दस से बारह कदमों में नापी जा सकती है। कमरे के एक तरफ किचन है जिसमें गैस, बर्तन, मसाले के डिब्बे और सब्ज़ियाँ आदि रखी हुई हैं। दूसरी तरफ सीढ़ियाँ हैं जिनसे लोगों का आना-जाना बराबर बना रहता है। किचन का सामान भी वहीं कुछ दूरी पर रखा हुआ है जिससे बची-खुची जगह भी घिर जाती है।

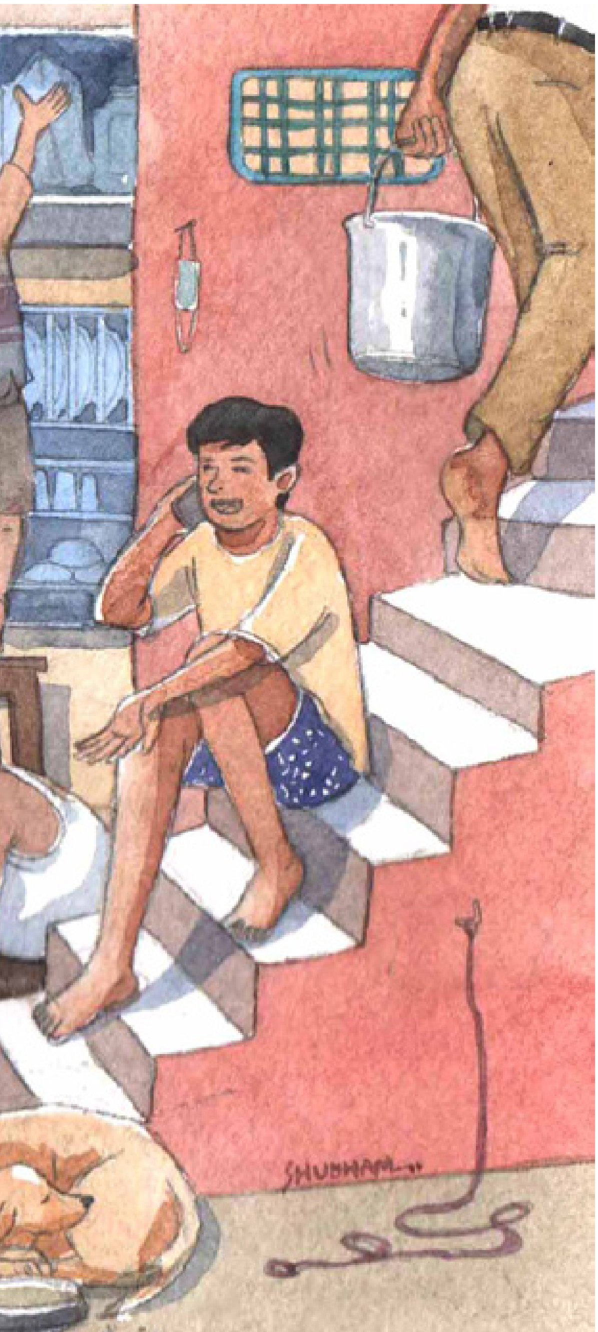

कोरोना से बचने के लिए सभी के खाने के बर्तन, तौलिए, कंघी इन सारी छोटी-छोटी चीज़ों को भी अलग-अलग रखा। हम सब हैं तो एक ही घर में। और फिर इस नई बीमारी पर तो किसी भी तरह का विश्वास नहीं किया जा सकता है ना!

यह वो किचन है जिससे तालाबन्दी के समय में नफरत-सी होने लगी थी। जब भी घड़ी में वक्त बीतता और शाम होने को आती तो किचन से दूर भागने को मन करता। खाना बनाने किचन में खड़े होते तो छौंक लगाते वक्त धसक पूरे घर में फैल जाती। नीचे-ऊपर की मंज़िल में रहते लोग चिल्लाकर बस यही कहते, “अरे! क्या छौंक दिया। खाँसी आने लगी। खाँसते-खाँसते पूरे गले में दर्द हो रहा है, बोला तक नहीं जा रहा है। एक तो धुआँ इतना तेज़ है कि आँखें जलने लगी हैं। तुझे तो पता ही है कि हम सब कहीं जा नहीं सकते, और तूने अभी तड़का लगाकर धसक उड़ा दी।” यह सुनकर मैं चुप हो जाती और पर्दा हटाकर धुएँ को बाहर करने की कोशिश करने लगती। जब खाना बनता है तो शीशे पर भाप से पानी की एक परत-सी चढ़ जाती है। उससे गले में ऐसी जलन पैदा होती है कि न तो साँसें ऊपर जा पाती हैं, और ना ही नीचे। आँखों में लाली उतर आती है जिसे कोई भी देख सकता है। पूरे घर में घूमती हुई नज़रें जब घड़ी पर रुकतीं तो मन चाहता कि कहीं छुप जाऊँ। लेकिन तालाबन्दी में तो घर से निकलना ही दुश्वार था।

मजबूरी में खाना बनाने जाना पड़ता। गैस ऑन करते ही गरम भभका मुँह पर लगता। बर्तन में तेल डालते ही चटक की जो आवाज़ होती उससे सिरदर्द होने लगता। अगर तेल की एक भी बूँद छिटककर मुँह पर लगे तो इतनी जलन होती कि सहना मुश्किल होता है, और निशान तो छूट ही रहता है। यह जलन भरी हवा सिर्फ खाना बनाने वाले को ही नहीं, बल्कि सभी को परेशान कर डालती है। और ज़्यादा लोगों के घर ही में होने की वजह से सोशल डिंस्टेसिंग रखने की कोशिश धरी की धरी रह जाती।

कोरोना से बचे रहने की कोशिश में हमने नियम बनाया कि किचन में खाना बनाने एक ही व्यक्ति जाए। वह जो किसी भी काम से घर से बाहर न जाता हो। बाकी लोग किचन में गैस से दूर ही रहें। और घर में भी सभी लोग आपस में दूरी बनाकर ही बैठें। यह अपनी तरफ से एक छोटी-सी शुरुआत थी। कोरोना से बचने के लिए सभी के खाने के बर्तन, तौलिए, कंघी इन सारी छोटी-छोटी चीज़ों को भी अलग-अलग रखा। हम सब हैं तो एक ही घर में। और फिर इस नई बीमारी पर तो किसी भी तरह का विश्वास नहीं किया जा सकता है ना! दो गज की दूरी बनाने के लिए हमने अलग-अलग तरकीबें निकालीं। इसमें यह भी शामिल था कि अब सब अपने-अपने कपड़े भी अलग-अलग ही धोएँगे। लेकिन बचाव पर हम इतना ज़्यादा ध्यान देने लगे कि घर की परेशानियाँ कोरोना से भी विकराल नज़र आने लगीं।

कुछ दिनों बाद एहसास हुआ कि ऐसा करने से सर्फ में बहुत ज़्यादा पैसा खर्च हो रहा है। इतने में तो हम एक हफ्ते का तेल खरीद सकते हैं। कोरोना की दिक्कतों के साथ पानी की दिक्कत से परेशानी में और इज़ाफा हो गया। पानी की तंगी में अगर सारा पानी कपड़े धोने में ही चला जाएगा तो बाकी का काम कैसे होगा! एक बचाव के लिए हमारा कितना समय और कितना पानी बर्बाद हो सकता है, इसका अन्दाज़ा होने पर हमने कपड़ों को अलग-अलग धोने की नई आदत बन्द कर दी। जैसे कपड़े अलग धोने का प्लान था, वैसे ही नहाने के साबुन का भी था। उसे भी घर के बजट को देखते हुए छोड़ना पड़ा।

यह तो रही दिन की कोशिश। हमने रात को सोते हुए भी आपस में दूरी बरतने की कोशिश की। पर सवाल यह था कि दूरी बनेगी कैसे। इसलिए सभी ने यह सोचा कि एक ही बेड पर हम सब एक-दूसरे के बीच तकिए की एक लाइन बना लेंगे। लेकिन रात में किसे पता कि हाथ-पैर कहाँ चलते हैं, और वह तकिया कहाँ से कहाँ चला जाता है। इसके बावजूद मम्मी-पापा फर्श पर पलंग के दोनों ओर अलग-अलग सोने लगे। हर हाल में हम सब को सोशल डिस्टेंसिंग का पालन तो करना ही था। इसी में हम सब की भलाई थी।

कुछ दिनों बाद एहसास हुआ कि ऐसा करने से सर्फ में बहुत ज़्यादा पैसा खर्च हो रहा है। इतने में तो हम एक हफ्ते का तेल खरीद सकते हैं। कोरोना की दिक्कतों के साथ पानी की दिक्कत से परेशानी में और इज़ाफा हो गया। पानी की तंगी में अगर सारा पानी कपड़े धोने में ही चला जाएगा तो बाकी का काम कैसे होगा!

जारी...

अंजलि, सर्वोदय कन्या विद्यालय में नौवीं कक्षा की छात्रा हैं। वह पिछले पाँच सालों से अंकुर संस्था से जुड़ी हैं। यह उनकी पहली प्रकाशित रचना है।

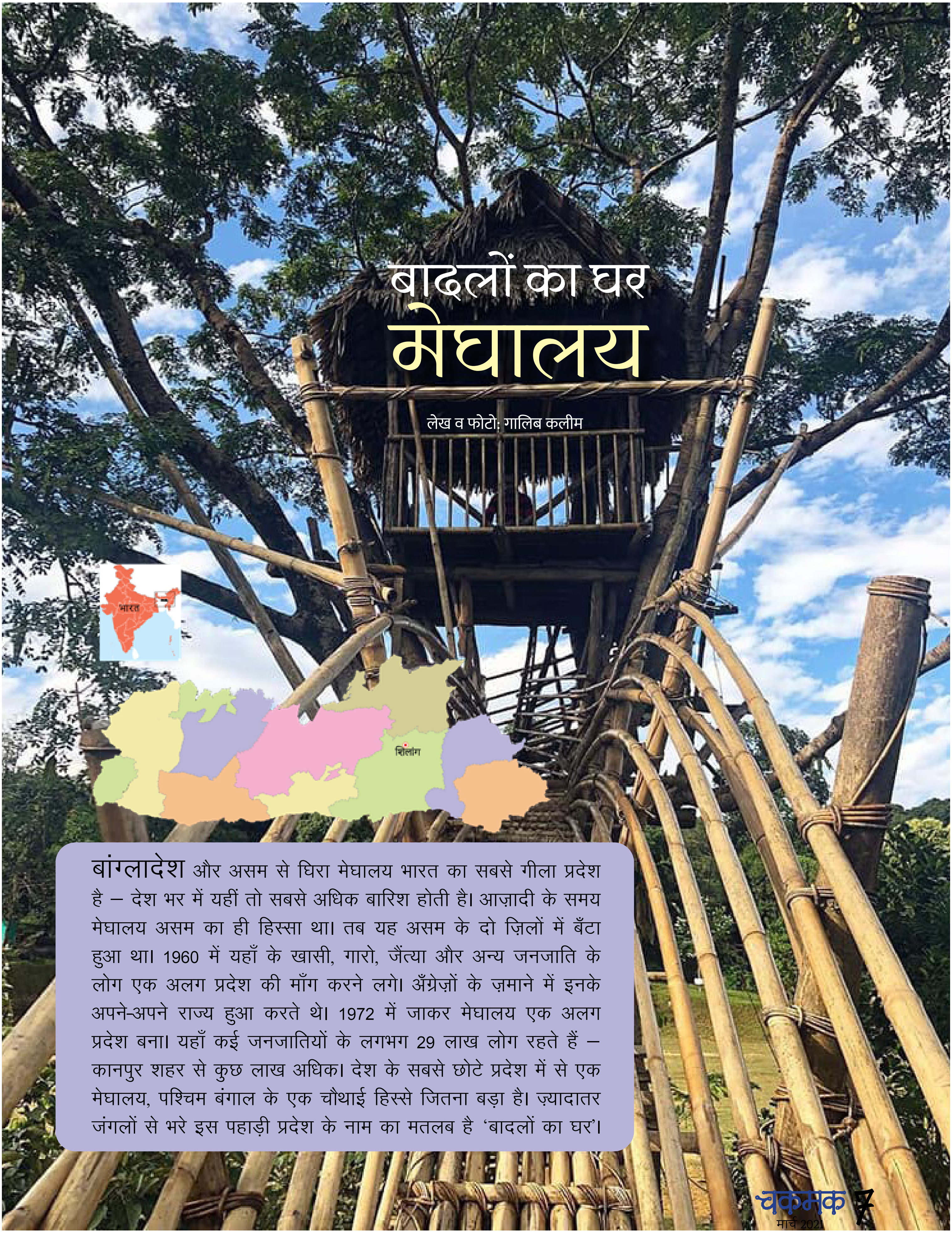

बादलों का घर
मेघालय

लेख व फोटो: गालिब कलीम

बांग्लादेश और असम से घिरा मेघालय भारत का सबसे गीला प्रदेश है – देश भर में यहीं तो सबसे अधिक बारिश होती है। आज़ादी के समय मेघालय असम का ही हिस्सा था। तब यह असम के दो ज़िलों में बँटा हुआ था। 1960 में यहाँ के खासी, गारो, जैंत्या और अन्य जनजाति के लोग एक अलग प्रदेश की माँग करने लगे। अँग्रेज़ों के ज़माने में इनके अपने-अपने राज्य हुआ करते थे। 1972 में जाकर मेघालय एक अलग प्रदेश बना। यहाँ कई जनजातियों के लगभग 29 लाख लोग रहते हैं – कानपुर शहर से कुछ लाख अधिक। देश के सबसे छोटे प्रदेश में से एक मेघालय, पश्चिम बंगाल के एक चौथाई हिस्से जितना बड़ा है। ज़्यादातर जंगलों से भरे इस पहाड़ी प्रदेश के नाम का मतलब है 'बादलों का घर'।

साफ-सफाई में अव्वल गाँव

एशिया का सबसे साफ-सुथरा गाँव 'मावलिननॉन्ग' मेघालय में है। साल 2003 में इस गाँव को एशिया के सबसे साफ-सुथरे गाँव के तौर पर चुना गया। इस गाँव की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यहाँ की सारी साफ-सफाई गाँव वाले खुद ही करते हैं। स्वच्छता के लिए यहाँ के लोग किसी तरह से प्रशासन पर निर्भर नहीं हैं।

इस छोटे-से गाँव में प्लास्टिक पूरी तरह से प्रतिबन्धित है। पूरे गाँव में जगह-जगह बाँस से बने हुए डस्टबिन लगाए गए हैं। महिला, पुरुष और बच्चों समेत किसी भी गाँव वाले को अगर कहीं गन्दगी नज़र आती है तो वे फौरन सफाई में लग जाते हैं। सफाई के प्रति उनकी जागरूकता का अन्दाज़ा तुम इस बात से लगा सकते हो कि अगर सड़क पर चलते हुए उन्हें कहीं भी कचरा नज़र आए तो वे पहले कचरे को डस्टबिन में डालते हैं। फिर आगे बढ़ते हैं। यहाँ लोग अपने घर से निकलने वाले कूड़े-कचरे को भी डस्टबिन में जमा करते हैं। और फिर उसे एक जगह इकट्ठा कर खेती के लिए खाद की तरह इस्तेमाल करते हैं।

ऐसा कहा जाता है कि 130 साल पहले इस गाँव को हैजे की बीमारी ने बुरी तरह से जकड़ लिया था। मेडिकल सुविधा न होने की वजह से इस बीमारी से छुटकारा पाने का एकमात्र उपाय था – सफाई करना। गाँव के लोगों का मानना है कि हमारे पूर्वजों ने कहा था कि तुम सफाई के ज़रिए ही खुद को बचा सकते हो। फिर चाहे वह खाना हो, घर हो, ज़मीन हो, गाँव हो या फिर अपना शरीर ही क्यों न हो, सफाई ज़रूरी है। यही वजह है कि घर-घर शौचालय के मामले में भी यह गाँव सबसे आगे है। यहाँ 100 में से लगभग 95 घरों में शौचालय बना हुआ है।

साफ-सफाई के साथ-साथ यह गाँव शिक्षा के मामले में भी अव्वल है। यहाँ की साक्षरता दर 100 फीसदी है। यानी गाँव में रहने वाले सभी लोग पढ़े-लिखे हैं। यहाँ रहने वाले ज़्यादातर लोग सिर्फ अँग्रेज़ी में ही बात करते हैं। सुपारी की खेती ही इन लोगों की आजीविका का मुख्य साधन है।

देश की सबसे साफ नदी

देश में नदियों की हालत तो किसी से छुपी नहीं है। नदियों की साफ-सफाई के लिए अरबों-खरबों के प्रोजेक्ट आते हैं, लेकिन इन सबके बावजूद भी नदियों की हालत ज्यों की त्यों है। इसके ज़िम्मेदार सरकार के साथ-साथ हम लोग खुद भी हैं। अगर हम लोग नदियों में कूड़ा-करकट फेंकना बन्द कर दें तो नदियाँ साफ रहेंगी।

इसकी एक मिसाल है मेघालय की उमंगोट नदी। इसका पानी इतना साफ है कि उसमें काँच की तरह आर-पार दिखता है। पानी के नीचे का एक-एक पत्थर क्रिस्टल की तरह साफ नज़र आता है। ऐसा लगता है मानो नाव किसी काँच के ऊपर तैर रही हो।

उमंगोट नदी तीन गाँवों से होकर बहती है – दाउकी, दरांग और शेंनान्डेंगा। इन्हीं गाँवों के लोगों के ज़िम्मे इसकी सफाई है। मौसम और पर्यटकों की संख्या के हिसाब से महीने में कुछ दिन कम्युनिटी डे के होते हैं। इस दिन गाँव के हर घर से कम से कम एक व्यक्ति नदी की सफाई के लिए आता है। गाँव में करीब 300 घर हैं और सभी मिलकर सफाई करते हैं। गन्दगी फैलाने पर 5000 रुपए तक जुर्माना वसूला जाता है।

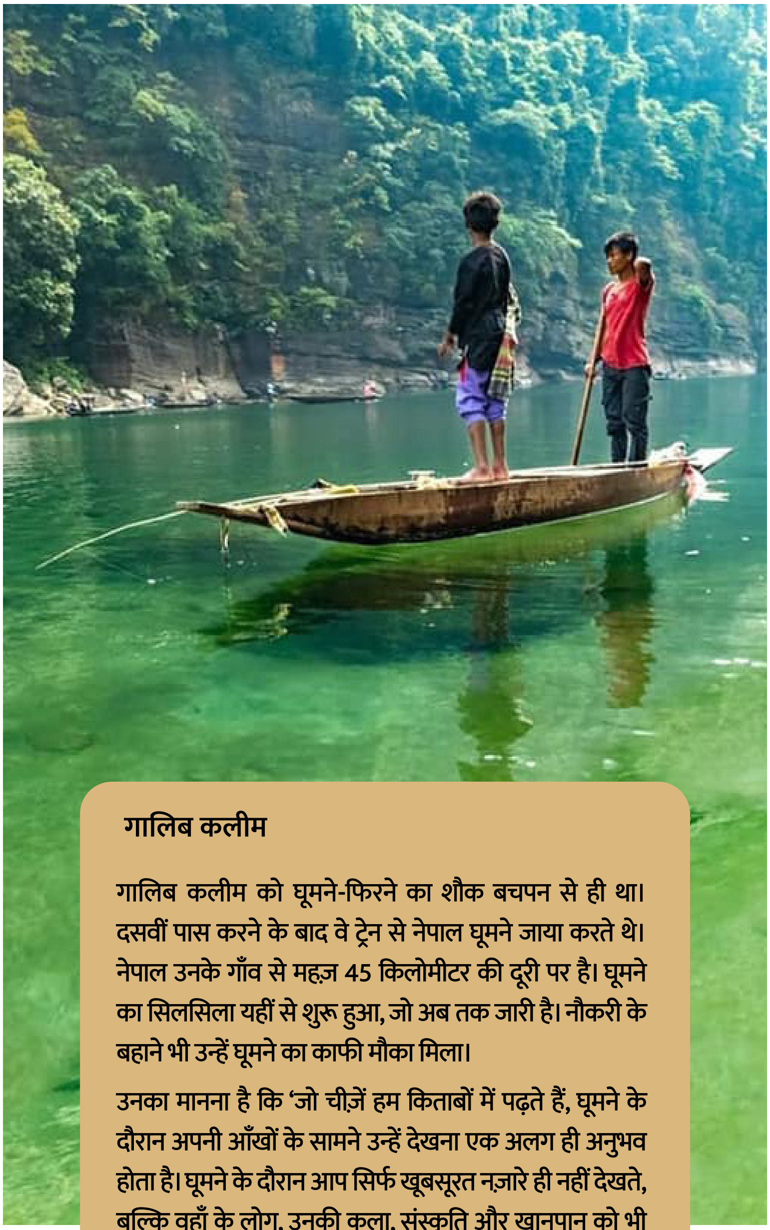

गालिब कलीम

गालिब कलीम को घूमने-फिरने का शौक बचपन से ही था। दसवीं पास करने के बाद वे ट्रेन से नेपाल घूमने जाया करते थे। नेपाल उनके गाँव से महज़ 45 किलोमीटर की दूरी पर है। घूमने का सिलसिला यहीं से शुरू हुआ, जो अब तक जारी है। नौकरी के बहाने भी उन्हें घूमने का काफी मौका मिला।

उनका मानना है कि 'जो चीज़ें हम किताबों में पढ़ते हैं, घूमने के दौरान अपनी आँखों के सामने उन्हें देखना एक अलग ही अनुभव होता है। घूमने के दौरान आप सिर्फ खूबसूरत नज़ारे ही नहीं देखते, बल्कि वहाँ के लोग, उनकी कला, संस्कृति और खानपान को भी नज़दीक से देखने और समझने का मौका मिलता है।'

उन्होंने बुलेट से भारत के लगभग सभी खतरनाक रास्तों का सफर तय किया है, फिर चाहे अरुणाचल हो या लद्दाख। यही नहीं वे भूटान और नेपाल की सभी जगहों के रास्ते भी नाप चुके हैं।

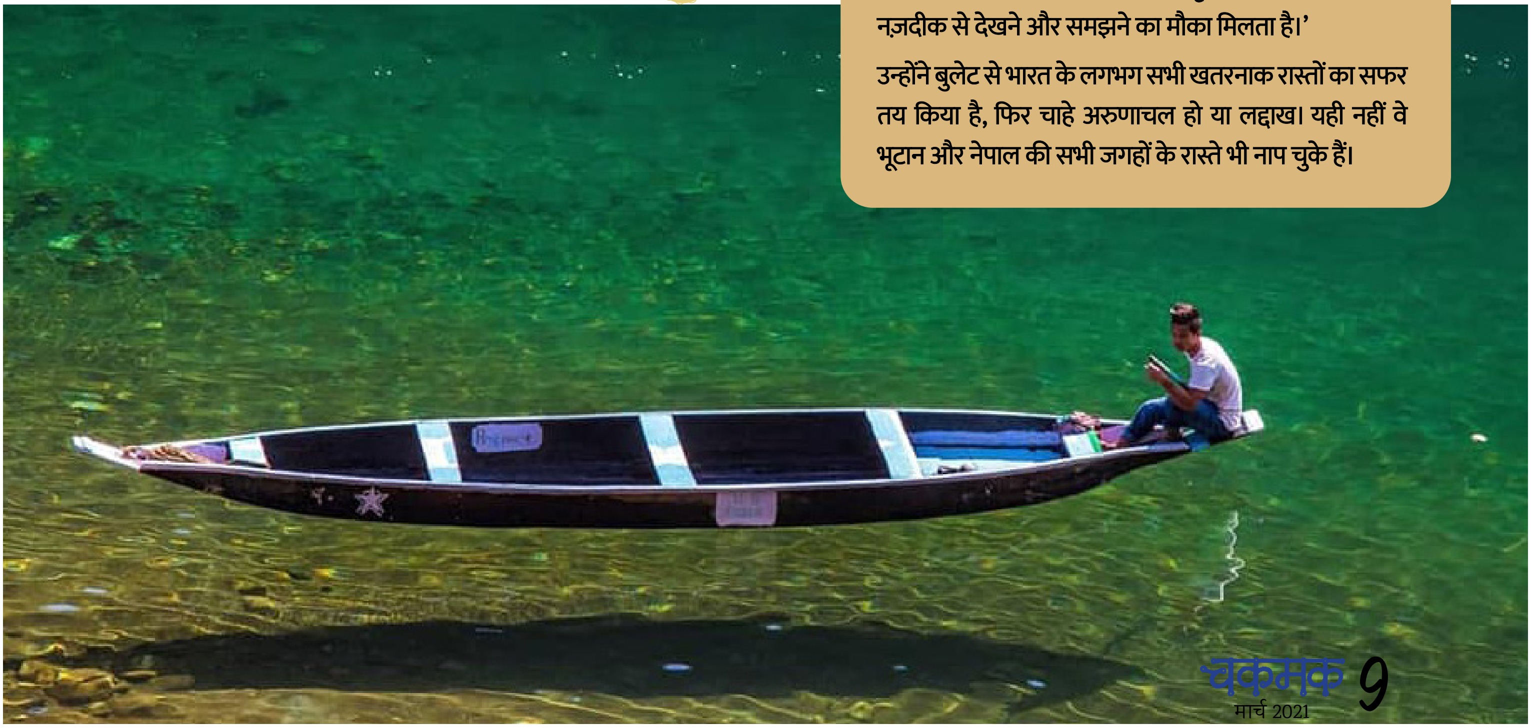

कम्बख्त उम्र

कहानी व फोटो: प्रभात

चित्र: कनक शशि

झुके हुए बादलों के नीचे बड़े भाया (पिता के बड़े भाई) खेत जोत रहे थे। लीली बादी और खाड्या नाम के बैल कुड़ी (खेत जुताई के लिए हल से अलग एक उपकरण) खींच रहे थे। कुड़ी की प्आस (कटर) में जब खेत की मिट्टी और खरपतवार का ढेर लग जाता तो कुड़ी खींचने में बैलों को ज़ोर आने लगता। बड़े भाया उन्हें रोक लेते। कुड़ी को एक सिरे से उठाकर घुटनों से ऊपर पाँव पर धरते। कूड़े का ढेर लगी खेत में गड़ी प्आस ऊपर उठ जाती। अब भाया खैंरेटे से मिट्टी और खरपतवार हटाते। कुड़ी हल्की-फूल हो जाती। बैलों की चाल में फुर्ती आ जाती। यह दृश्य मुझे इतना मनोरम लगता कि मैं सोचता था, “मैं इतना बड़ा कब होऊँगा कि कुड़ी की प्आस से मिट्टी और खरतपवार हटा सकूँ।” अब तो न वे कुड़ी-बैल रहे, न बड़े भाया ही, और मैं भी वह दस-ग्यारह बरस का किसान लड़का नहीं रहा। पर उस उम्र के किस्से मेरी यादों में आज भी महफ़ूज़ हैं।

भाया (पिता) मुझे किसान लड़के के रूप में बड़े होते नहीं देखना चाहते थे। वे मुझे पढ़े-लिखे लड़के के रूप में देखना चाहते थे। यही वजह थी कि वे

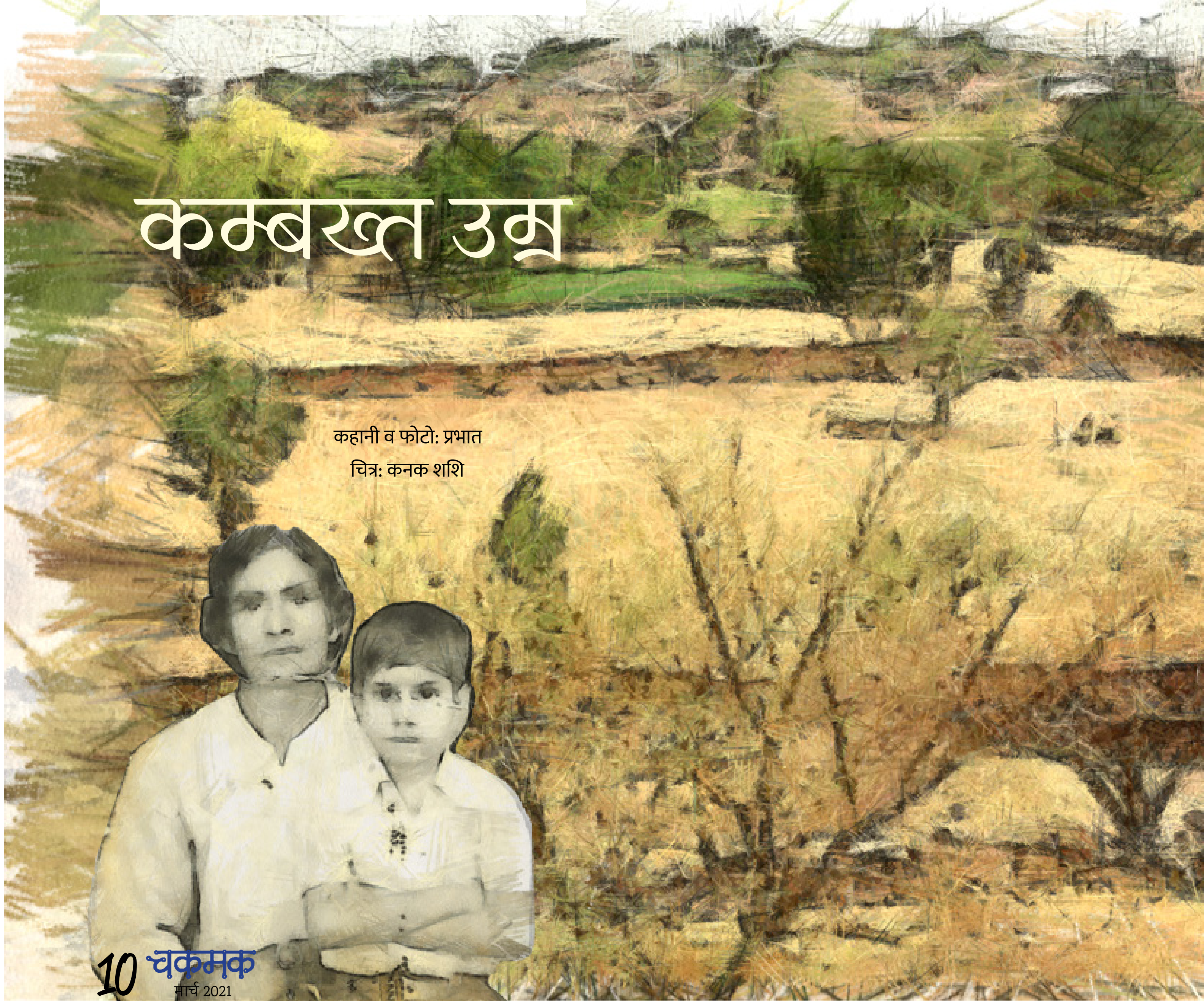

मैंने सोचा बलम की मदद हो जाएगी चलो इस पत्थर को उठाते हैं। पत्थर इतना वज़नी था कि मैं दोनों हाथों से उसे उठा नहीं सकता था सो मैंने उसे पलटने का निश्चय किया। पलटने के लिए जैसे ही एक ओर से उठाया, मैंने उसके नीचे साँप को किलबिलाते देखा। मेरी रूह काँप गई।

मुझे खेती-किसानी के कामों में हाथ नहीं लगाने देते थे। और यह दस-ग्यारह बरस की उम्र कम्बख्त ऐसी होती है कि इसमें हर काम को भाग-भागकर करने की हूक मन में मचलती है। मेरी गाय चराने जाने की इच्छा होती थी, भाया नहीं जाने देते थे। इसका नुकसान यह हुआ कि मैं गाँव के जंगल के डबरों में पानी में तैरती जोंक कभी नहीं देख पाया। और तुलसीदास की इस पंक्ति 'चलहिं जोंक जिमि वक्र गति' के बिम्ब के लिए मुझे आज भी अनुमान का ही सहारा लेना पड़ता है। क्योंकि जोंक की वक्र गति के अवलोकन का सुख मुझे लेने न दिया गया। जोंक हमारी भैंसों के चिपककर उनका खून पीती थी। कभी-कभी जोंक डबरों में से भैंस निकालकर लाने वाले चरवाहों की पिण्डलियों में चिपक जाती थी और इन्सान का खून चूसने का लुत्फ उठाती थी।

यह उम्र कम्बख्त ऐसी भी है कि जिसमें बच्चे करते तो अच्छा हैं, पर हर चीज़ उलटी पड़ जाती है। गाँव में मकान का काम चल रहा था। क्योंकि मकान के अभाव में बाबा शिवाले में सोते थे। बड़े काका गाँव की चौपालों पर सोते थे। काकियाँ, बुआएँ और बहनें पशुबाड़े में सोती थीं। मैंने सोचा भाया मुझे गाय चराने जाने नहीं देते। खेतों में जाता हूँ तो साँझ पड़े डाँटते हैं। चलो मकान के काम में ही हाथ बँटाओ। 'बलम' नाम का बेलदार 'कान्हा' नाम के मिस्त्री को बड़े-बड़े पत्थर सिर पर पर उठाकर पहुँचा रहा था। मैंने सोचा बलम की मदद हो जाएगी। चलो, इस पत्थर को उठाते हैं। पत्थर इतना वज़नी था कि मैं दोनों हाथों से उसे उठा नहीं सकता था। सो मैंने उसे पलटने का निश्चय किया। पलटने के लिए जैसे ही एक ओर से उठाया, मैंने उसके नीचे साँप को किलबिलाते देखा। मेरी रूह काँप गई। भाया के डर से मैंने किसी को नहीं बताया। पर ऐसी बात किसी से छिपती नहीं। भाया के प्रकोप को घर में सब जानते थे। काका-काकी ने सलाह दी, "तू पाटोर में जाकर किताब उठाकर पढ़ने लग जा।" मैंने ऐसा ही किया। पर भाया तो आ गए। इस डर से कि भाया के गर्म-जलते वाक्य मेरे दिल-दिमाग

की चमड़ी न उधेड़ दें, काका-काकी मुझे बचाने के लिए भाया के पीछे-पीछे ही आ गए। भाया के कुर्ते में चाबी पड़ी थी। जब तक काका-काकी आए भाया वह चाबी मुझे दे चुके थे। और मुझ दस-ग्यारह बरस के बच्चे से कह रहे थे, “यह ले इस घर की चाबी। इसे जैसा चलाना चाहे वैसा चला। मैं तो ये घर छोड़कर जा रहा हूँ। कभी ज़िन्दगी में तेरे घर और इस गाँव में पैर नहीं दूँगा।”

मैं एकदम जड़, कुन्द, जंग-खाया हो चुका था। काका-काकी मेरा हाथ पकड़ वहाँ से ले गए। भाया सचमुच गाँव छोड़कर चले गए। तीन-चार घण्टे बाद गाँव का एक आदमी मुझे माफी मँगवाने के लिए पड़ोस के गाँव में भाया के पास लेकर गया। भाया होटल पर चाय पी रहे थे। उनके चेहरे पर अभी भी रोष था। तब मैंने ‘दुबारा ऐसी गलती नहीं होगी’ ऐसा कहा होगा जिसका मतलब शायद यही रहा होगा कि आज के बाद जीवन में ऐसा पत्थर कभी नहीं उठाऊँगा जिसके नीचे साँप निकले।

भाया के इस विकट भावुक स्वभाव की यह मुझ पर पहली मार नहीं थी। जब मैं दूसरी में पढ़ता था तब की इस घटना से उनके स्वभाव पर और प्रकाश पड़ेगा। एक बार मुझसे तखत पर स्याही ढुल गई। मैंने सोचा अब क्या करूँ? मुझे और तो कुछ सूझा नहीं मैं जल्दी से स्याही को तखत पर ही लीपकर वहाँ से हवा हो लिया। खाट में जाकर चद्दर ओढ़कर सो गया। भाया ने स्कूल जाने के समय में मुझे चद्दर ओढ़कर सोते हुए देखा तो उनके कान खड़े हो गए। बोले, “क्या बात है?” मेरा मुँह चद्दर से बाहर ही था और आँखें खुली हुई थीं। मैंने कहा, “कुछ नहीं।” बोले, “सो क्यों रहा है?” मैंने कहा, “नींद आ रही है।” बोले, “झूठ बोल रहा है?” मैंने कहा, “नहीं।” फिर भाया की आँखों की फटकार से मैं एकदम सीधा होकर खाट पर तनकर बैठ गया। भाया को मेरी स्याही में सनी हथेलियाँ दिख गईं। वे बोले, “प्रतिज्ञा कर।” मैं शुरू हो गया, “भारत मेरा देश है। समस्त भारतीय मेरे भाई...।” डपटते हुए बोले, “समस्त भारतीय नहीं”, मैं कहता हूँ ऐसे बोल।

मैंने कहा, “बोलूँगा।” फिर एक लाइन भाया ने बोली और मैंने उसे दोहराया। एक हाथ छाती पर और एक हाथ बाजू के बल सीधी दिशा में रखते हुए मैंने प्रतिज्ञा पूरी की जो इस प्रकार है–

मैं प्रण करता हूँ कि
मैं प्रण करता हूँ कि
आज के बाद जीवन में कभी
आज के बाद जीवन में कभी
झूठ नहीं बोलूँगा
झूठ नहीं बोलूँगा।

घर में हर कोई भाया के गुस्से का शिकार होता था। एक बार हमारी किसी शैतानी पर बाबा ने मुझे और गोपाल (बड़े काका का लड़का जो मुझसे बस छह महीने बड़ा है।) को खूँटी से बाँधकर लटकाया हुआ था। हम दोनों बँधे-बँधे भी स्वतंत्रता सेनानियों की तरह मुस्करा रहे थे। तभी गाँव में आग की तरह फैलती हुई भाया के शहर से गाँव आने की खबर हमारे घर तक आ गई। किसी ने भाया को पोस्टकार्ड लिख दिया था कि तुम्हारा लड़का गाँव में बहुत दुख पा

रहा है। उसे कोई रोटी नहीं देता। दिन भर दर-दर भूख से मारा-मारा फिरता है। कई बार तो हमने रोटी दी है। भाया उन दिनों पोस्टमैन थे। शहर की चिट्ठियाँ छाँटते समय जब उन्हें अपने नाम का पोस्टकार्ड मिला तो वे उसी क्षण पोस्टमास्टर से छुट्टी माँगकर दफ्तरी वर्दी में ही गाँव की ओर आने वाली बस में बैठ गए। भाया के गाँव में आ पहुँचने की आग की लपट बाबा तक पहुँची तो बाबा ने फटाफट हमें खूँटियों से खोल दिया और बाड़े में खड़े-खड़े अपनी सफेद मूँछों पर ऐसे हाथ फेरने लगे जैसे उन्होंने हमें बाँधा ही नहीं था। भाया ने बाबा से ऐसा झगड़ा किया कि हम खड़े-खड़े रोने लगे। बाद में समझ में आया कि यह झगड़ा वास्तव में बँटवारे को लेकर था। भाया अपने भाइयों से अलग होना चाहते थे। भाई भी यही चाहते थे। बाबा ही गांधी जी की तरह अड़े थे कि बँटवारा न हो, पर वह हुआ।

भाया उसी क्षण मेरा हाथ पकड़कर ले गए। जिस तेज़ी-से आग लगी थी उसी तेज़ी-से बुझी। रात तक मैं भाया के साथ शहर पहुँच गया। उस दिन का अपने गाँव से निकला मैं आज तक वापस नहीं लौट पाया हूँ।

बीच-बीच में स्कूल की छुट्टी-छपाटियों में गाँव आना होता था। खेती-किसानी के कामों को करने की ललक शहर में रहकर भी मरी नहीं थी। गाँव आते ही बड़े भाया और बड़े काका के आसपास मँडराता कि वे कोई काम करने के लिए बता दें। कह दें कि "बैलों को पानी पिला लाओ। बछड़े को पकड़कर खूँटे से बाँध दो" आदि। वे नहीं बताते तो भी मैं और गोपाल मौका देखकर काम माँग लेते। यह घटना तब की है जब मैं आठवीं में पढ़ता था। एक बार खलिहान से तूड़ा (भूसा) गाड़े (बैलगाड़ी) में भर-भरकर खलिहान से घर उतारा जा रहा था। जाते समय गाड़ा भरा हुआ जाता था और आते समय खाली। तो हमने बड़े भाया से कहा, "भाया गाड़े को खलिहान में हम ले जाएँगे।" हमारे बहुत ज़िद करने पर बड़े भाया ने इजाज़त दे दी। मैं और गोपाल गाड़े पर चढ़

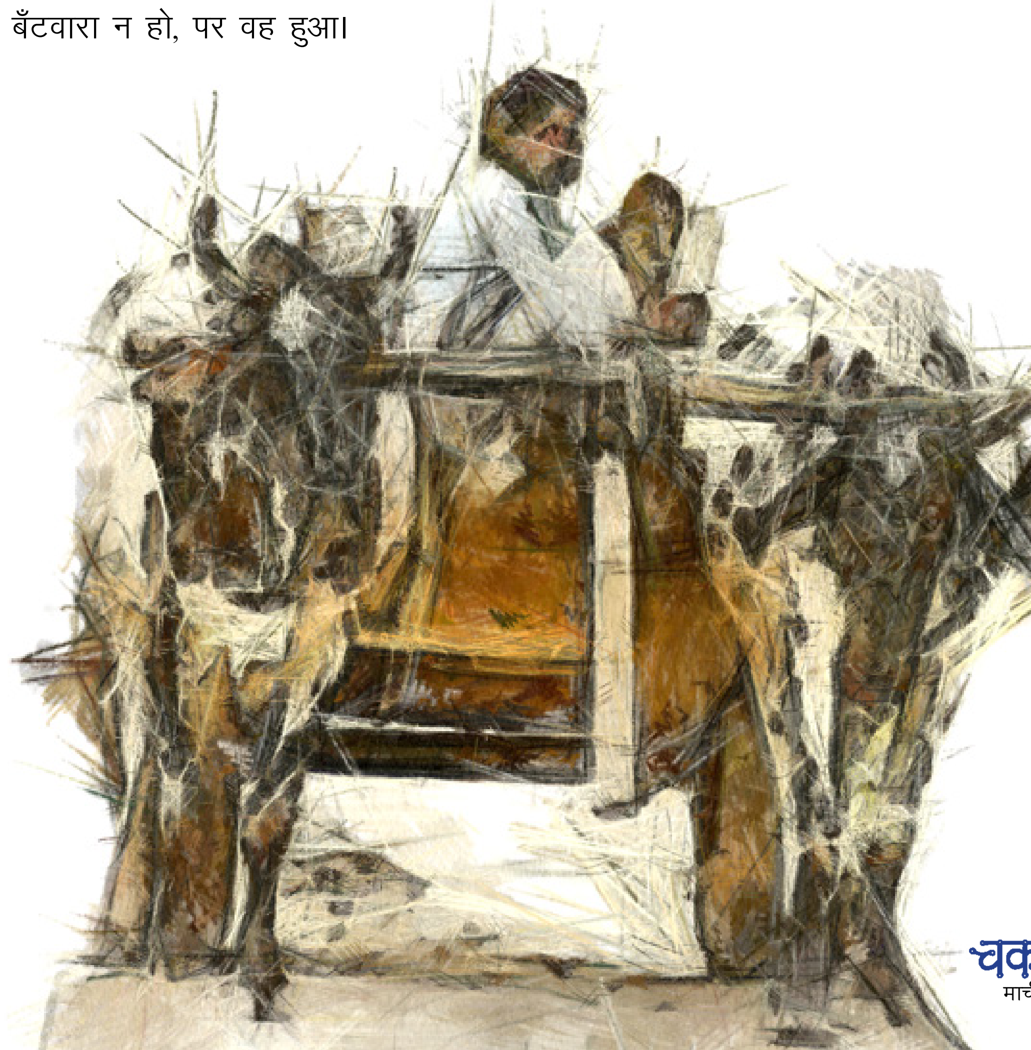

गए और बैलों को हाँकने लगे। बैलों ने देख लिया कि गाड़े में बड़े भाया और काका में से कोई नहीं है। दो अनाड़ी लड़के हैं। वे दौड़-दौड़कर चलने लगे। मस्ती करने लगे। गाड़ा उचकने लगा। मैं और गोपाल उछलने लगे। बैलों की रस्सी हमारे हाथों से छूट गई। हम गाड़े में टिण्डे, टमाटरों की तरह बिखरने लगे। जो बैल दस मिनट में घर से खलिहान तक पहुँचते थे दो ही मिनट में पहुँच गए। गाड़े की घड़घड़ाहट सुनकर खलिहान में खड़े काका ने देखा कि ये क्या भूचाल आ रहा है! उन्होंने हमें गाड़े में उछलते देखा तो मामला समझ गए। और समझते ही भड़क गए और हमें गालियाँ देने लगे। और कहने लगे, “रोको-रोको, बैलों का जेवड़ा कर खींचो।” पर हम तो ऐसी हालत में ही नहीं थे। हम तो खुद ही को उछलने-बिखरने से नहीं रोक पा रहे थे। खलिहान में चारा ढोने के दो ढकोले रखे थे। ये ढकोले, ढकोला बनाने वाले ने पन्द्रह दिन में बनाकर दिए थे। उन नए ढकोलों को तोड़ते-रौंदते हुए बैल गाड़े को लेकर उड़ रहे थे। बड़ी मुश्किल से काका ने बैलों को काबू में किया। फिर हमें फटकार लगाई, “किस बेवकूफ ने तुम्हें गाड़ा लेकर भेज दिया। नए ढकोलों का नाश कर दिया। चुपचाप घर जाकर किताब खोलकर बैठ जाओ, नहीं तो जान से खतम कर दूँगा।” मैं और गोपाल कड़ी फटकार खाया चेहरा लिए घर की ओर चल पड़े।

क्यों क्यों

क्यों-क्यों में इस बार का
हमारा सवाल था—

ऐसी कौन-सी बात है जो तुम्हें दिन में कई बार सुनने को मिलती है और जो तुम्हें बिलकुल भी पसन्द नहीं है, और क्यों?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो। तुम्हारा मन करे तो तुम भी हमें अपने जवाब लिख भेजना।

अगली बार के लिए सवाल है—

तुमने कई अलग-अलग किरदारों की कहानियाँ पढ़ी-सुनी होंगी। उनमें से तुम्हारा पसन्दीदा किरदार कौन है, और क्यों?

अपने जवाब तुम हमें लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर भेज सकते हो।

जवाब तुम हमें
chakmak@eklavya.in पर ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर व्हॉट्सऐप भी कर सकते हो।
चाहो तो डाक से भी भेज सकते हो।
हमारा पता है:

चकमक
एकलव्य फाउंडेशन
जमनालाल बजाज परिसर
जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास
भोपाल - 462026, मध्य प्रदेश

हमें दिन भर में कई बार ये शब्द सुनने को मिलता है कि अबे इधर आ। अबे काम कर। यह शब्द अच्छा नहीं लगता। बहुत खराब लगता है। क्योंकि हमारा नाम अबे नहीं है। अबे शब्द का अर्थ नहीं पता पर अबे गाली जैसा लगता है। घर पर हमारे बड़े भैया और बाकी लोग अबे कहकर बुलाते हैं।

राकेश, दूसरी, अपना स्कूल, सम्राट सेंटर, चौबेपुर, कानपुर, उत्तर प्रदेश

हमें मास्क लगाने के लिए दीदीजी बार-बार कहती हैं। मुझे मास्क लगाने में बहुत आलसपन महसूस होता है। मुझे मास्क लगाना पसन्द नहीं है। क्योंकि मास्क लगाने से मुझे बोलने और साँस लेने में परेशानी होती है।

नन्दिनी, छठवीं, अपना स्कूल, तातियागंज, कानपुर, उत्तर प्रदेश

जिस दिन मैं घर का काम नहीं करती हूँ तो मेरी मम्मी कहती हैं खुशी को देखो। कितनी छोटी है और घर का सारा काम करती है। जबकि ये तो एक भी काम नहीं करती। यह बात मुझे बिलकुल पसन्द नहीं कि काम करो तो डाँटती हैं, ना करो तो भी डाँटती हैं। तो हम करें तो क्या करें। यह वाक्य जब मैं सुनती हूँ कि घर का काम कर लिया कर। ससुराल में भी क्या तेरी मम्मी आकर काम करेंगी। तो मुझे घर का काम करना बिलकुल अच्छा नहीं लगता।

शीतल, नौवीं, दीपालया लर्निंग सेंटर, दिल्ली

चित्र: समीक्षा आनन्द, बाल भवन किलकारी, पटना, बिहार

मेरी मम्मी दिन-रात गाली देती हैं। और स्कूल नहीं भेजती हैं। और सब हमें काली-कलूटी बोलकर चिढ़ाते हैं। ये ऐसी बाते हैं जो मुझे बिलकुल अच्छी नहीं लगती पर दिन भर सुननी पड़ती हैं।

अंजलि कुमारी, तीसरी, अपना तालीम घर, फ़ैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

मुझे बाहर घूमना पसन्द है। लेकिन मैं कहीं भी बाहर घूमने नहीं जा पाती। क्योंकि लोग मुझे देखते ही कहते हैं "ठिंगी-ठिंगी"। मेरी हाइट कम है इसलिए मुझे लोग ठिंगी कहकर बुलाते हैं। मुझे यह सुनकर बहुत बुरा लगता है और गुस्सा भी आता है। इसलिए मैं अपने घर पर ही रहती हूँ। अपने रिश्तेदारों के घर भी नहीं जा पाती।

कभी-कभी मैं सोचती हूँ कि काश मेरी लम्बाई भी थोड़ी और होती तो लोग मुझे इस नाम से नहीं पुकारते। जब मुझे बहुत ज़रूरी काम होता है तब मैं बाहर निकलती हूँ। लेकिन तब भी लोग मुझे देखकर बोलते हैं कि इस लड़की की कितनी कम हाइट है। यह तो ठिंगी है। यह सुनते ही मन करता है कि उनके मुँह पर मारूँ। लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकती। उन लोगों को भी सोचना चाहिए कि मेरी लम्बाई कम है तो क्या हुआ, मेरे हाथ पैर तो सही-सलामत हैं। यही सोचकर मैं उनको कुछ नहीं कहती और अपने घर आ जाती हूँ।

रजनी, एक्शन इंडिया, दिल्ली

चित्र: जानह्वी वर्मा, छठवीं, अपना तालीम घर, फ़ैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

मुझे महल्ले में सभी लोग मोटू-मोटू कहकर बुलाते रहते हैं। और स्कूल में भी कहते हैं। मुझे बहुत गुस्सा आता है क्योंकि मैं तो उन लोगों को पतला या मोटा नहीं कहता हूँ।

लोमेश यादव, सातवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

हमें बदतमीज़ और गँवार शब्द दिन में कई बार सुनना पड़ता है। यह हमें बिलकुल पसन्द नहीं। कुछ बच्चे पढ़ाई में थोड़ा ज़्यादा कमज़ोर होते हैं। तो शिक्षक और माँ-बाप उन्हें गँवार कहने लगते हैं। लेकिन हो सकता है कि उसे समझ में ना आ रहा हो या समझ में कम आता हो। कई लोग बदतमीज़ कहते हैं। लेकिन वह बदतमीज़ नहीं है क्योंकि हो सकता है कि लोगों और बच्चों का खेलना, हँसना, मज़ाक करना उसे अच्छा लगता हो।

अशोक, आठवीं, अपना स्कूल, तातियागंज, कानपुर, उत्तर प्रदेश

मम्मी-पापा दोनों ही बार-बार बोलते हैं कि शोर नहीं करो, लड़ाई नहीं करो। बच्चे हैं, शोर तो करेंगे ही। शोर नहीं करेंगे तो पता कैसे चलेगा कि घर में बच्चे भी हैं। मुझे यह बात इसलिए पसन्द नहीं है क्योंकि बच्चे शोर नहीं करेंगे तो क्या चुपचाप बैठे रहेंगे।

प्राची पाटीदार, सातवीं, इबेनेज़र सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश

मुझे यह बात अच्छी नहीं लगती कि मेरी मम्मी हर दिन मुझसे एक ही बात कहती हैं कि पढ़ाई कर ले। तेरी शादी हो जाएगी तो तेरे बच्चे तुझसे बिस्कुट के पैसे माँगेंगे और तू नहीं दे पाएगा।

राजवीर चौहान, सातवीं, केरला पब्लिक स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश

कई लोग मुझे चाण्डाल कहते हैं। यह मैं दिन भर में बहुत बार सुनता हूँ। और मेरे दोस्त भी मुझे मेरे पैर के रंग के कारण लाल पैर वाला आदमी या कभी-कभी एलियन भी कहते हैं। यह सुनकर मुझे बहुत गुस्सा आता है क्योंकि ना ही मैं लोगों की चिता जलाता हूँ, ना तो मैं किसी अन्य ग्रह से आया हूँ। बस मेरी शारीरिक बनावट ऐसी है जिसे मेरे दोस्त समझ नहीं पाते।

खुशहाल सिन्हा, सातवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

मुझे दिन में कई बार कहा जाता है कि दुकान से ये ले आओ, वो ले आओ। यह मुझे पसन्द नहीं है क्योंकि मुझे बार-बार दुकान जाना पसन्द नहीं है।

प्रिंस, चौथी, एसडीएमसी स्कूल, हौज़ खास, दिल्ली

चित्र: गोपाल, दूसरी, अपना स्कूल, सम्राट सेंटर, चौबेपुर, कानपुर, उत्तर प्रदेश

हाल ही में पता चला है कि किसी गर्म दिन में हाथी अपने शरीर का 10 प्रतिशत तक पानी गँवा देते हैं। यह ज़मीन पर पाए जाने वाले किसी भी जीव की तुलना में अधिक है।

लाड़-प्यार में पलने वाले चिड़ियाघर के हाथियों के लिए तो यह बात कोई मायने नहीं रखती। लेकिन वैश्विक तापमान में बढ़ोतरी को देखते हुए जंगली हाथियों के लिए यह चिन्ता का विषय है। तुम शायद जानते होगे कि हाथियों पर पहले से ही विलुप्ति का खतरा मँडरा रहा है। ऐसे में पानी की कमी से उनकी जन्म-दर में कमी, बच्चे के लिए दूध की कमी और निर्जलीकरण (शरीर में पानी की कमी) के कारण मृत्यु की सम्भावना बढ़ जाएगी।

हाथियों को हर दिन सैकड़ों लीटर पानी की ज़रूरत होती है। लेकिन जलवायु परिवर्तन से उनकी पानी की ज़रूरतों में किस तरह के बदलाव होंगे यह अभी तक स्पष्ट नहीं है। इसके लिए नॉर्थ कैरोलिना चिड़ियाघर के पाँच अफ्रीकी सवाना हाथियों पर अध्ययन किया गया। साधारण पानी हाइड्रोजन और ऑक्सीजन से बना अणु होता है। लेकिन इस अध्ययन में तीन वर्षों के दौरान छह अवसरों पर हाथियों को साधारण पानी की बजाय 'भारी पानी' (हाइड्रोजन के भारी समस्थानिक ड्यूटेरियम से बने) की नपी-तुली खुराक दी। यह भारी पानी शरीर के पानी में घुल जाता है। पानी की तरह यह भी शरीर से उत्सर्जित हो (निकल) जाता है। तो इन हाथियों के रक्त के नमूनों में बचे हुए ड्यूटेरियम को नापकर हम इसका अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि जब से हाथियों को ड्यूटेरियम दिया गया उतने समय में उन्होंने कितना पानी गँवाया है। यानी कि उन्होंने यह पता लगाया कि हाथी कितनी तेज़ी-से शरीर का पानी गँवा रहे हैं।

पता चला कि ठण्डे मौसम (6 से 14 डिग्री सेल्सियस तापमान पर) में नर हाथी औसतन 325 लीटर तक पानी गँवा देते हैं, जबकि गर्म दिनों (24 डिग्री सेल्सियस तापमान पर) में यह मात्रा औसतन 427 लीटर होती है और कभी-कभी 516 लीटर तक

शरीर का पानी गँवाकर खतरे में हाथी

हो सकती है। यह मात्रा शरीर में उपस्थित कुल पानी का 10 प्रतिशत या शरीर के द्रव्यमान का 7.5 प्रतिशत तक है। इसलिए हाथियों को निर्जलीकरण के खतरनाक स्तर से बचने के लिए हर 2 से 3 दिन में कम से कम एक बार खूब पानी पीना पड़ता है।

तुलना के लिए किसी गर्म वातावरण में घोड़े प्रतिदिन 40 लीटर पानी गँवाते हैं जो उनके शरीर के द्रव्यमान का 6 प्रतिशत है। मनुष्यों में यह मात्रा 3-5 लीटर प्रतिदिन है जो हमारे शरीर के द्रव्यमान का 5 प्रतिशत है। यह मात्रा मैराथन धावकों और फौजियों में दो गुनी होती है।

इस चर्चा में एक महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि वैश्विक तापमान में बढ़ोतरी के साथ हाथियों को अधिक पानी की ज़रूरत होगी। लेकिन पानी के स्रोत और पानी से भरपूर पेड़ों में कमी आने से समस्या काफी जटिल हो सकती है। ऐसे में संसाधनों की कमी के चलते मनुष्यों और हाथियों में संघर्ष के हालात और बिगड़ सकते हैं। कभी-कभी हाथी फसलों पर हमला कर देते हैं या फिर भूमिगत जल संरचनाओं को नष्ट करते हैं। इससे दोनों प्रजातियों में टकराव घातक हो जाता है।

(स्रोत फीचर्स)

काश

नितिन कुशवाह, प्राथमिक शाला कल्याणपुर,
राहतगढ़, सागर, मध्य प्रदेश

काश, यदि ऐसा हो जाता
एक छोटा हाथी मिल जाता

उस पे बैठ स्कूल में जाता
सबके जी को मैं भा जाता

उसके साथ खुश हो जाता
सबके आगे शान बताता

चींटियों के बारे में...

nature conservation foundation
science for conservation

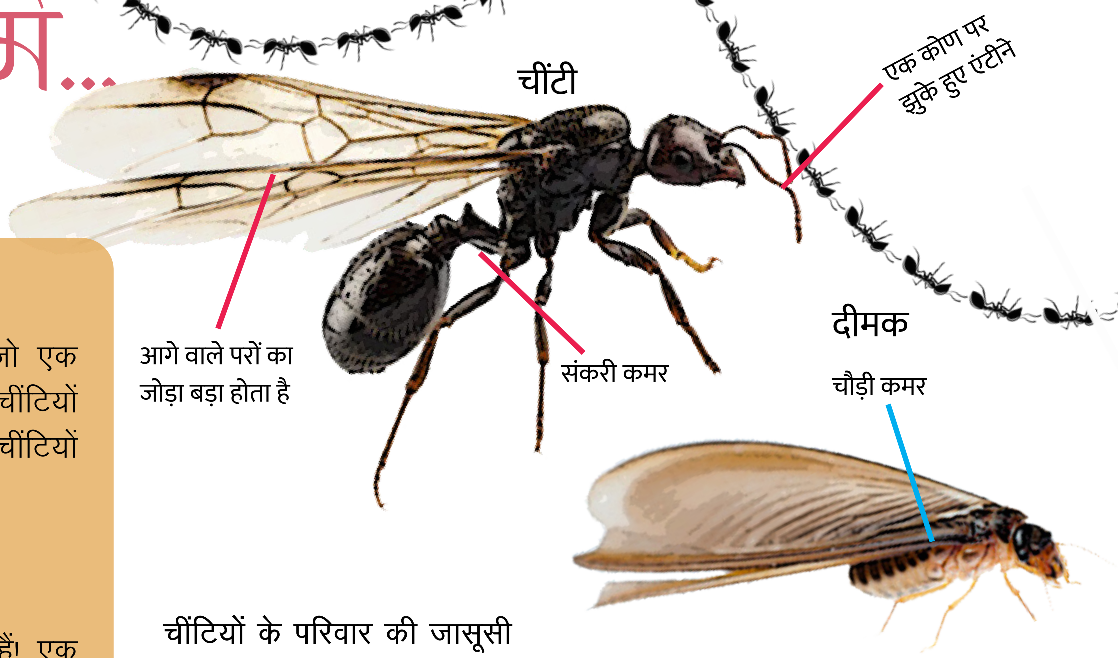

विशेषज्ञ से मिलिए

मिलिए जोयश्री से, जो एक मरमिकॉलोजिस्ट (चींटियों की विशेषज्ञ) हैं और चींटियों की दीवानी हैं।

चींटियाँ ही क्यों?

जोयश्री: कई कारण हैं! एक तो यह है कि मनुष्यों की तरह चींटियाँ भी सामाजिक जीव हैं। वे बहुत व्यवस्थित कॉलोनियों में रहती हैं। इसके अलावा, दुनिया में कई खरब चींटियाँ हैं– इतनी कि उन सबका कुल वज़न दुनिया के सारे जानवरों के कुल वज़न का 15-20% होगा।

कैसे पता चलेगा कि हम चींटियों को देख रहे हैं या दीमकों को?

जोयश्री: अच्छा सवाल है। हम में से ज़्यादातर लोग दीमकों को चींटियाँ समझ लेते हैं। इनमें पाए जाने वाले अन्तरों को ऊपर दिए गए यहाँ चित्र में देखा जा सकता है...

चींटियों के परिवार की जासूसी

तुम्हें चाहिए:

थोड़ी-सी शक्कर, गत्ते का एक टुकड़ा, कुछ पत्थर और तुम्हारी फील्ड डायरी।

1. एक चींटी को खोजकर उसका पीछा करो। और उसकी कॉलोनी/बाम्बी का पता लगाओ।
2. उनकी बाम्बी से कुछ दूर (अगर तुम बाम्बी न ढूँढ़ पाओ तो चींटियों की कतार से भी काम चल जाएगा) जहाँ पर चींटियाँ आ-जा रही हों, वहाँ गत्ते का टुकड़ा रख दो। उसे पत्थर से दबा दो और उसके ऊपर थोड़ी शक्कर रख दो।
3. अपनी फील्ड डायरी में यह बातें नोट करो:
    - तुम्हारी रखी हुई शक्कर का पता चींटियाँ कितनी जल्दी लगाती हैं?
    - हर दो मिनट बाद चींटियों की संख्या नोट करो, ऐसा 10 मिनट तक करो।
    - खाने की दूसरी चीज़ों के साथ भी ऐसा ही करो जैसे कि नमक, नींबू, हरी सब्ज़ियाँ, उबले अण्डे के टुकड़े। तुम मरा हुआ कीड़ा भी ले सकते हो। अगर तुम्हें कोई अलग किस्म की चींटी नज़र आएँ तो खाने को लेकर दोनों की पसन्द की तुलना करो।

अनुवाद: मुदित श्रीवास्तव

चींटियाँ कैसे रहती हैं?

वे अपनी बाम्बियाँ पेड़ों पर बनाती हैं या ज़मीन के नीचे बनाती हैं जिनमें सुरंगें और कमरे होते हैं।

एक कॉलोनी में ज़्यादातर मादा चींटियाँ ही रहती हैं।

बाम्बियों पर एक या एक से ज़्यादा रानी चींटियाँ राज करती हैं।

बची हुई चींटियाँ ज़्यादातर मज़दूर चींटियाँ होती हैं जो बाहर जाकर खाना तलाशती हैं। और रानियों के अण्डों व बच्चों की देखभाल करती हैं...

...या फिर सैनिक चींटियाँ होती हैं जिन्हें हमलावरों से बाम्बी की सुरक्षा करने में महारत हासिल होती है। ये मज़दूर चींटियों के लिए रास्ते साफ करती हैं, और कड़क बीजों को तोड़ने में मदद करती हैं।

नर चींटियाँ बाम्बी के अन्दर ही रहते हैं, और भविष्य की रानियों के पैदा होने का इन्तज़ार करते हैं।

समय आने पर सभी नर और राजकुमारी चींटियों के पंख उग आते हैं। और वे दूसरी कॉलोनी की चींटियों के साथ उड़ जाते हैं और प्रजनन के लिए साथी ढूँढ़ते हैं।

राजकुमारी चींटी किसी सुरक्षित जगह पर अपने अण्डे देती है, और नई कॉलोनी शुरू करती है, जिसकी रानी वह खुद होती है।

प्रतियोगिता

जब तुमने तरह-तरह का खाना रखा तो चींटियों की उनके प्रति क्या प्रतिक्रिया थी chakmak@eklavya.in पर हमें बताओ और कीड़ों के बारे में एक किताब जीतने का मौका पाओ।

नर चींटियाँ जल्द ही मर जाते हैं।

तुम भी जानो

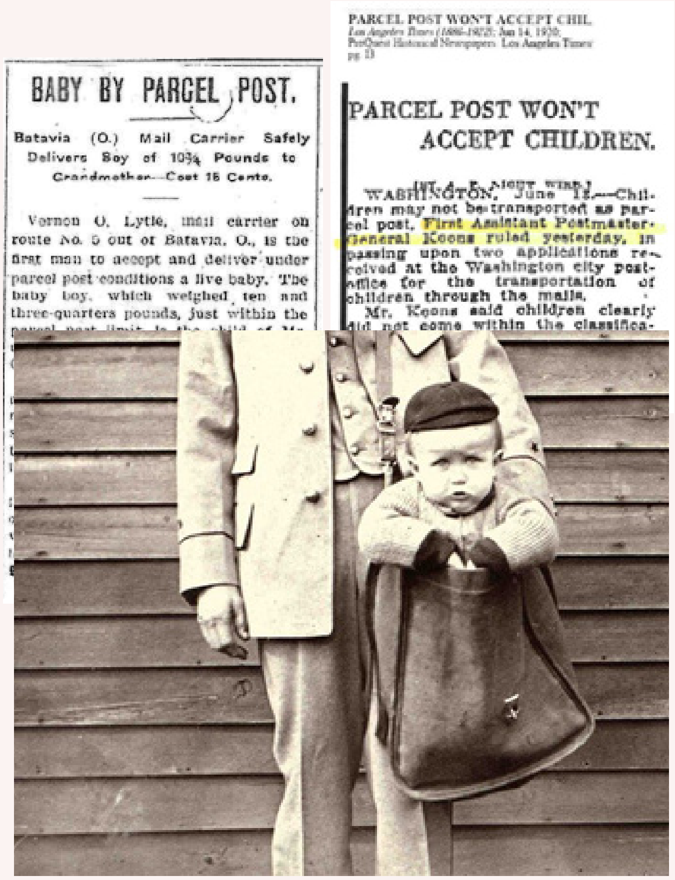
BABY BY PARCEL POST.

Batavia (O.) Mail Carrier Safely Delivers Boy of 10¾ Pounds to Grandmother—Cost 15 Cents.

Vernon O. Lytle, mail carrier on route No. 5 out of Batavia, O., is the first man to accept and deliver under parcel post conditions a live baby. The baby boy, which weighed ten and three-quarters pounds, just within the

PARCEL POST WON'T ACCEPT CHIL
Los Angeles Times (1886-1922); Jun 14, 1920;
ProQuest Historical Newspapers: Los Angeles Times
pg. I3

PARCEL POST WON'T ACCEPT CHILDREN.

WASHINGTON, June 13.—Children may not be transported as parcel post, First Assistant Postmaster-General Koons ruled yesterday, in passing upon two applications received at the Washington city post-office for the transportation of children through the mails.

Mr. Koons said children clearly did not come within the classifica-

पार्सल में बच्चे

सन 1913 में अमरीका में पहली बार पोस्ट ऑफिस द्वारा बड़े पार्सल भेजने की सुविधा शुरू की गई। दूर-दराज़ के गाँवों में भी पार्सल भेजे जाने लगे। लेकिन हुआ यूँ कि कुछ माता-पिता ने अपने बच्चों को पार्सल सेवा के ज़रिए एक जगह से दूसरी जगह भेजने की कोशिश की।

जेम्स नाम के आठ महीने के एक बच्चे को उसकी दादी के यहाँ भेजने के लिए बुक किया गया। इस पार्सल को बुक करने में जेम्स के माता-पिता को केवल पन्द्रह सेंट्स का खर्चा आया। जल्द ही अखबार में यह खबर छपी जिसे पढ़कर कई और लोगों ने भी ऐसा किया। शार्लेट मे नाम की चार साल की एक बच्ची को भी ट्रेन में पार्सल सुविधा के तहत अपनी दादी के गाँव भेजा गया। उसकी कहानी इतनी पॉपुलर हुई कि *मेलिंग मे* नाम की किताब में छापी भी गई।

जब बहुत सारे लोग ऐसा करने लगे तो कुछ सालों बाद पोस्ट ऑफिस ने बच्चों को पार्सल सर्विस से भेजना बन्द कर दिया।

बैंगनी गाजर

तुमने ज़्यादातर लाल और नारंगी रंग की गाजर ही देखी होंगी। लेकिन गाजर केवल लाल रंग की ही नहीं होतीं, बल्कि बैंगनी, गहरे कत्थई-लाल और पीले रंग की भी होती हैं।

दरअसल गाजरों का असली रंग बैंगनी ही था। लाल या नारंगी रंग, गाजरों में एक लम्बे समय में हुए जेनेटिक बदलाव के कारण आया है। बैंगनी रंग की गाजर में लाल और नारंगी गाजरों की तुलना में कम शर्करा पाई जाती है। बैंगनी रंग की गाजरों की खेती की शुरुआत अफगानिस्तान से हुई। बाकी गाजरों की तुलना में बैंगनी गाजरों में अल्फा और बीटा कैरोटीन ज़्यादा होता है जिससे हमारा शरीर विटामिन-ए तैयार करता है।

यदि तुम्हें बाज़ार में बैंगनी गाजर दिखे तो एक-दो गाजर खाकर देखना कि स्वाद में कुछ फर्क है या नहीं।

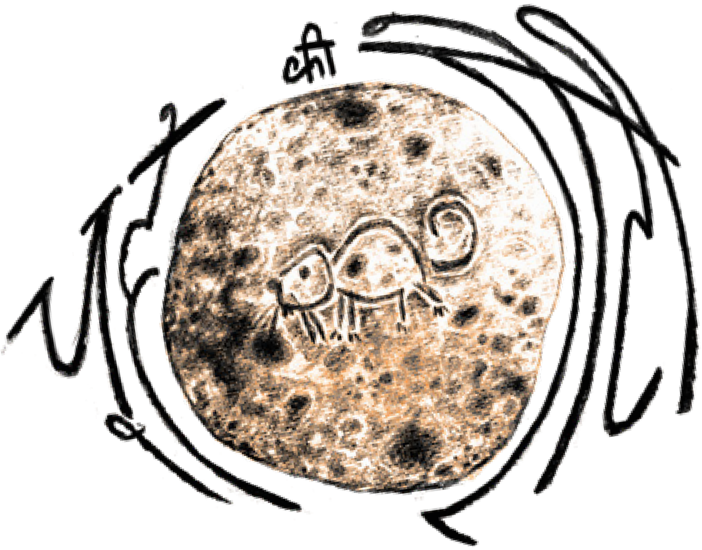

वृशाली जोशी
चित्र: हबीब अली

गाँव के बाहर खेतों से भी आगे बिमली दादी का घर है। घर तो क्या, गाँव वालों के खेतों में काम करने के बाद सोने भर की जगह है। और घर के बाहर रोटी बनाने के लिए पत्थर का एक चूल्हा है। घर में एक तवा, एक थाली, एक पतीला, मटका और बिस्तर रखा है। इनमें से पतीला कभी-कभार ही काम आता है। जब नमक के साथ उसमें थोड़ी दाल या सब्ज़ी पकती है।

आज दादी ने थाली में रोटी रखी और उस पर अखबार ढँक दिया। यह अखबार दादी खास तौर से गाँव की तरफ जाकर रास्ते के कोने-से उठाकर लाई थीं। दादी अब थाली के सामने वाली ज़मीन पर चूहे का चित्र कुरेदने लगीं यह सोचकर कि इससे चूहे को पता चलेगा कि यह रोटी उसके लिए है। चित्र बनाकर दादी काम पर निकल गईं।

शाम को घर लौटीं। रोटी खाकर, पानी पीकर वह सोने वाली थीं। तभी उन्होंने देखा कि पतीले में रखी रोटी भी गायब हो चुकी थीं। ऊपर से ढँके कागज़ इधर-उधर बिखरे पड़े थे। चूहा आज भी सारी की सारी रोटी चट कर गया था। दादी ने पानी पिया और सो गईं।

दूसरे दिन फिर चिड़ियों की चहचहाहट भरी सुबह आ गई। दादी हमेशा सोचतीं कि ना जाने यह सुबह कहाँ से आती है और शाम को कहाँ चली जाती है। यही कुछ-कुछ सोचते रोज़ की तरह दादी के दिन की शुरुआत हुई। उनका पहला काम था नदी से पानी लाकर रोटी बनाना। आज दादी ने एक रोटी थाली में और दूसरी तवे पर रख दी। थाली वाली रोटी पर बचा हुआ अखबार ढँका और तवे वाली रोटी पर पतीला ढँका। आज भी दादी ने थाली के सामने चूहे का चित्र कुरेदा। और उसके साथ तवे के सामने अपना खुद का चित्र कुरेदा। दादी को लगा कि शायद इससे चूहे को पता चले कि तवे पर रखी रोटी दादी की है। उसे चूहा ना खाए तो अच्छा होगा।

शाम को जब दादी काम करके लौटीं तो पता चला कि आज उनका तरीका काम कर गया है। चूहे ने सिर्फ थाली में रखी रोटी ही खाई थी। और तवे पर रखी रोटी जैसी की तैसी थी। दादी ने फटाफट हाथ-मुँह धोए और प्याज़ के साथ रोटी खाकर सो गईं।

हफ्तों तक ऐसे ही चलता रहा। दादी हर रोज़ चूहे की रोटी थाली में सजाकर रखतीं। और अपनी रोटी तवे पर रख देतीं। फिर उनके सामने चित्र कुरेद देतीं। चूहे को अब इधर-उधर जाकर खाना ढूँढ़ने की बिलकुल ज़रूरत नहीं रही। वह आराम से थाली में रखी रोटी खा लेता। कभी स्वाद बदलने का मन करता तो वह गाँव की तरफ हो आता।

करते-करते सर्दियाँ आ गईं। इस साल ठण्ड काफी थी। सर्दी के कारण रात में चूहा दादी के घर में ही घुसा रहता और रात भर खुड़बुड़ाता रहता। दादी की नींद टूट जाती।

एक शाम दादी कहीं-कहीं से छोटे-मोटे, पतले कपड़े के टुकड़े उठा लाईं। और उनसे चूहे के लिए बिस्तर बनाया। बिस्तर के सामने की ज़मीन पर चूहे का चित्र कुरेदा। चूहा आकर बिस्तर पर सो गया।

अब चूहा दादी के साथ ही रहता। दादी ज़मीन पर चित्र कुरेदकर चूहे को कई बातें बतातीं। चूहा चित्र को और दादी को देखता रहता। अब चूहे को दादी से डर

नहीं लगता। और दादी को भी अब अकेलापन नहीं लगता। दादी जो-जो बातें सोचतीं, वह सब चूहे को बतातीं जैसे कि सुबह वाली, रात वाली, जादुई तितली वाली, पहाड़ पर रहने वाले अच्छे राक्षस वाली, चलते-फिरते पेड़ वाली।

जब दादी खेतों में काम करने जातीं तो चूहा जी-जान लगाकर पतीले को पलटने की कोशिश करता। पर पतीला टस से मस नहीं होता। वह पतीला काफी वज़नदार है। या यू कहें कि पतीले का वज़न इतना तो है कि दादी का विश्वास हमेशा बना रहेगा कि चूहा चित्रों वाली भाषा समझता है।

उस वज़नदार पतीले के अन्दर रोटी रखकर पतीले को थाली या कागज़ से ढँकना और तवे पर रोटी रखकर पतीले से उसे ढँकना इन दोनों बातों का अन्तर चूहे को पता है। चित्रों वाली भाषा उसे समझ आती है या नहीं यह तो वही जाने।

चित्र: गौरी मिश्रा, चौथी, प्राथमिक विद्यालय धुसाह - प्रथम, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

खर्राटे लेने वाले गुस्से के नहीं दया के हकदार हैं

सुशील जोशी

हम खर्राटे इसलिए लेते हैं ताकि हमें सपना ना आए। नाना-नानी तभी खर्राटे लेते हैं जब उन्हें सपना आता है।

शीतल, चौथी, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

हम तो नींद में होते हैं तो हमें कुछ नहीं पता चलता कि हम कब खर्राटे ले रहे हैं और कैसे ले रहे हैं।

तिशा, चौथी, प्रोत्साहन इंडिया फाउंडेशन, दिल्ली

फरवरी अंक में हमने तुमसे पूछा था कि लोग खर्राटे क्यों लेते हैं और बच्चों की तुलना में बड़े ज़्यादा खर्राटे क्यों लेते हैं। तुम्हारे मज़ेदारों जवाबों को सुशील जोशी ने भी पढ़ा। उनका लिखा जवाब तुम यहाँ पढ़ सकते हो।

सोचा था पहले ही लिख लूँगा। पर अच्छा ही हुआ कि पहले नहीं लिखा। अब तुम लोगों के जवाब पढ़कर लिखने का मज़ा ले रहा हूँ।

खर्राटे मतलब सोते हुए नाक, मुँह, या गले से खर-खर की आवाज़ पैदा होना। यह साथ सोने वालों को बहुत परेशान करती है। लेकिन कभी सोचा है कि खर्राटे लेने वाले पर क्या बीतती है? नहीं सोचा हो तो अब सोचते हैं।

सबसे पहली बात तो यह है (मैंने स्कूल में पढ़ी थी) कि यदि कोई आवाज़ पैदा हो रही है, तो ज़रूर किसी चीज़ में कम्पन हो रहा है। यानी कोई चीज़ फड़फड़ा रही है। तो देखते हैं कि खर्राटों की आवाज़ किस चीज़ के फड़फड़ाने से निकलती है। पता नहीं तुमने ध्यान दिया है या नहीं पर यह जानना ज़रूरी है कि खर्राटों का सम्बन्ध साँस लेने से होता है। सोता हुआ व्यक्ति साँस लेता और छोड़ता है तब खर्राटों की आवाज़ निकलती है। तो लगता है कि साँस के साथ हवा के अन्दर जाने या बाहर निकलने के समय रास्ते में कोई चीज़ फड़फड़ाती है और आवाज़ करती है।

अब देखते हैं कि साँस के रास्ते में फड़फड़ाने के लिए क्या चीज़ें हैं।

नाक से साँस ली जाए तो नाक के अन्दर कोई चीज़ फड़फड़ा सकती है – ऐसा देखा गया है कि हमारे दो नथुनों के बीच जो दीवार होती है (चित्र 1) वह कई बार एकदम बीचोंबीच न होकर थोड़ी एक तरफ होती है। तो यह हवा के रास्ते में रुकावट पैदा करके फड़फड़ाती है।

चित्र 1

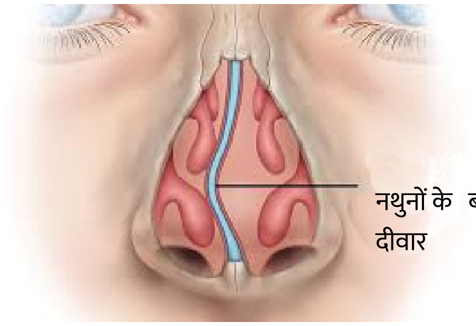

चित्र 2

यदि साँस मुँह से ले रहे हैं, तो? तो, मुँह की ऊपरी छत (यानी तालू) की भी इसमें भूमिका हो सकती है। सामने का तालू तो सख्त होता है। लेकिन पीछे की ओर यह मुलायम होता है। मुलायम तालू (चित्र 2) पीछे की ओर एक तिकोनी रचना के रूप में थोड़ा लटकता दिखता है। इसे आम बोलचाल में कौआ कहते हैं। अँग्रेज़ी में इसे उव्युला कहते हैं। साँस लेते समय यह भी फड़फड़ा सकता है।

इसके बाद साँस के रास्ते में वह हिस्सा आता है जो बोलने में मदद करता है – लैरिंक्स या ध्वनि यंत्र। यह तो फड़फड़ाने के लिए ही बना है। तो साँस लेते समय यह भी खर-खर कर सकता है।

तो साँस के रास्ते में बहुत सारे ऐसे हिस्से हैं जो खर्राटे पैदा कर सकते हैं। लेकिन ये हिस्से तो सब लोगों में होते हैं, तो फिर सब लोग सोते समय क्यों नहीं घोरते?

हो सकता है कि कुछ लोगों में इन हिस्सों की मांसपेशियाँ कमज़ोर पड़ गई हों जिसके कारण वे तनी हुई नहीं रहतीं, ढीली पड़ जाती हैं। तब ये ज़्यादा फड़फड़ा सकती हैं। उम्र के साथ मांसपेशियाँ थोड़ी शिथिल तो पड़ती ही हैं।

यह भी हो सकता है कि इन हिस्सों की बनावट में कुछ गड़बड़ हो। जैसे ऊपर हमने देखा कि दोनों नथुनों के बीच की दीवार यदि एक तरफ सरकी हुई हो तो एक तरफ का रास्ता संकरा हो जाता है और साँस के आने-जाने में रुकावट डालता है और फड़फड़ाता है। इसी प्रकार से यदि कौआ ज़रूरत से ज़्यादा बड़ा है और कमज़ोर है तो वह भी आवाज़ करेगा। ध्वनि यंत्र या साँस नली के अन्य हिस्सों की मांसपेशियाँ यदि कमज़ोर हैं तो वे भी आवाज़ करेंगी। तुम देख ही सकते हो कि बड़े लोगों में मांसपेशियाँ कमज़ोर होने लगती हैं और ये सभी हिस्से आवाज़ करने लगते हैं।

एक कारण यह भी हो सकता है कि किसी हिस्से में सूजन के कारण रास्ता संकरा हो गया हो। तब भी हवा के आना-जाने में रुकावट पैदा होगी।

थकान के कारण भी मांसपेशियाँ थोड़ी शिथिल पड़ जाती हैं और इसीलिए थका हुआ व्यक्ति खर्राटों की आवाज़ ज़्यादा करता है।

इन सब बातों का मतलब है कि खर्राटों का सम्बन्ध साँस के आने-जाने में रुकावट से है। और कभी-कभी यह रुकावट खतरा पैदा कर सकती है। इसलिए यदि किसी के खर्राटे बहुत बढ़ गए हों, तो डॉक्टर को दिखा देना अच्छा रहेगा।

ऐसा देखा गया है कि जब व्यक्ति करवट पर सोता है तो कम खर्राटे सुनाई पड़ते हैं। चित (यानी पीठ के बल) सोने पर खर्राटे ज़्यादा होते हैं। इसलिए यदि किसी के खर्राटे से ज़्यादा दिक्कत हो रही है, तो उसे थोड़ा ठेलकर करवट दिलवाकर राहत मिल सकती है।

लाड़कुंवर

पारुल बत्रा दुग्गल
चित्र: शिवांगी सिंह

लाड़कुंवर और रूपाली पक्के दोस्त थे। दोनों छठवीं में पढ़ते थे। जब मैडम पढ़ा रही होतीं तो वे एक-दूसरे को ऐसे देखतीं जैसे मन ही मन बातें कर रही हों – कभी लाड़कुंवर की चोटी में बँधे लाल रिबनों के बारे में, तो कभी कक्षा में रखी बड़ी-सी अलमारी के पीछे जने कुतिया के नए पिल्लों के बारे में।

दोनों मध्यप्रदेश के एक छोटे-से शहर टीकमगढ़ में रहती थीं। लाड़कुंवर का घर शहर के एक छोर पर था, जिसे ढोंगा कहते थे। वहाँ कुम्हारों का एक मोहल्ला था। उसी में लाड़कुंवर का खपरैल वाला बड़ा-सा घर था। आँगन में एक बेल का पेड़ था और कुम्हार की भट्टी भी। पूरे आँगन में पक्के और कच्चे मटके, दिये, सुराहियाँ और मिट्टी के गुल्लक जैसी चीज़ें फैली होतीं। आँगन के एक कोने में चूल्हा और दूसरे हिस्से में मुर्गियों का दड़बा था।

रूपाली का घर शहर के बीचों-बीच घनी बस्ती में नायकों के मोहल्ले के पास था। उसका घर एक पुरानी हवेली का हिस्सा था जिसे उसके परदादा ने टीकमगढ़ के राजा के एक ज़मींदार से पचास वर्ष पहले खरीदा था। यह हिस्सा किसी ज़माने में घोड़ों का अस्तबल था जिसे अब पुरानी हवेली का रूप दे दिया गया था।

स्कूल से आने के बाद कभी-कभी लाड़कुंवर अपनी माँ के साथ आसपास के गाँवों में मटके, मिट्टी के तवे, सुराहियाँ आदि बेचने जाया करती। अक्सर लाड़कुंवर रूपाली को बताती कि लोग मिट्टी के बर्तन खरीदने के लिए कितने नखरे करते, किस तरह गाँव की महिलाएँ एक-एक रुपए के लिए बहस करतीं। लाड़कुंवर उन महिलाओं की ऐसी बेहतरीन नकल उतारती कि रूपाली के पेट में हँस-हँसकर बल पड़ जाते। रूपाली सोचती कि उसे कभी यूँ गाँव-गाँव घूमकर बर्तन बेचने के मज़े क्यों नहीं मिलते?

एक बार गर्मियों की छुट्टियों में रूपाली अपनी नानी के घर आगरा जाने वाली थी। यह लगभग पच्चीस साल पुरानी बात है। तब टीकमगढ़ में रेल लाइन नहीं थी और रेल पकड़ने के लिए झाँसी जाना पड़ता था। रूपाली को पता था कि लाड़कुंवर ने कभी रेल नहीं देखी है। और उसकी दिली इच्छा रेल में बैठने की है। तो उसने सोचा क्यों न इस बार लाड़कुंवर को झाँसी तक साथ ले जाया जाए। वहाँ वह रेल में बैठ भले ही ना पाए, उसे देख तो सकेगी। इस्माइल चाचा रूपाली और बाकी सबको स्टेशन छोड़ने झाँसी तक जाएँगे तो लाड़कुंवर उनके साथ ही वापिस आ जाएगी। रूपाली ने जब लाड़कुंवर को यह बताया तो उसे तो खुशी के मारे रात भर नींद ही नहीं आई। सुबह सब जीप में चल पड़े।

झाँसी स्टेशन पहुँचते ही दोनों जीप से कूदकर बाहर निकलीं। “देखो ऐसा दिखता है स्टेशन”, रूपाली ने फट से कहा। “अच्छा, ये तो बहुत बड़ा

है। मुझे लगा छोटा-सा होगा", लाड़कुंवर बोली। प्लेटफार्म पर भारी भीड़ थी। पूड़ी-सब्ज़ी बेचने वाले ठेले, 'समोसे ले लो' चिल्लाते हुए खोमचे वाले, भागते हुए कुली, सामान के साथ लदे लोग, सुस्ताते हुए कुत्ते, ज़िद करते बच्चे, आराम फरमाते बूढ़े और रेल पकड़ने की हड़बड़ाहट में पटरियों के किनारे खड़े लोग।

"ये देखो प्लेटफार्म! जिस पर हम चल रहे हैं और वो ऊपर बिजली के तार जिससे रेल चलती है। और हाँ डीजल से चलने वाली भी होती हैं। वो है टिकट-काउंटर जहाँ से रेल में जाने के लिए टिकट लेना होता है और यह रहा स्टेशन मास्टर का कमरा", रूपाली जल्दी-जल्दी बोल रही थी। "और हाँ ये देखो पटरियाँ", रूपाली ने कहा। "ये तो बहुत पास-पास हैं, मुझे लगा कि बहुत दूर-दूर होती होंगी" कहकर लाड़कुंवर खुद ही हँस दी।

बातें करते हुए दोनों स्टेशन के छोर तक आ गए थे। तभी पीछे से हॉर्न की आवाज़ आई। "लाड़कुंवर, देखो रेल आ रही है।" लाड़कुंवर डरकर थोड़ा पीछे हट गई। "डरो मत, वह अपनी जगह पर रुकती है। चलो, डिब्बे गिनते हैं।" एक के बाद एक डिब्बे गिनते हुए दोनों का सिर चकराने लगा। थोड़ी देर बाद एक रेल आई और इंजन बिलकुल उनके पास आकर रुका। "चलो-चलो, इंजन में झाँकें" रूपाली ने लाड़कुंवर को खींचा। वे दोनों इंजन के दरवाज़े के सामने जाकर खड़े हो गए। इंजन के दोनों ड्राइवर अपने काम में लगे हुए थे।

"ओह! कितना बड़ा है और कितने सारे बटन हैं इसमें" लाड़कुंवर बोली।

तभी एक ड्राइवर का ध्यान उनकी ओर गया, "इतने गौर-से क्या देख रही हो तुम दोनों?"

"इंजन देख रहे हैं। मेरी सहेली पहली बार रेलवे स्टेशन आई है। क्या आप उसके लिए हॉर्न बजा सकते हैं? वह खुश हो जाएगी", रूपाली ने कहा।

"ठीक है, दो मिनट बाद ट्रेन छूटने का समय होगा। फिर बजा दूँगा। तब तक तुम लोग यहीं खड़े रहना।" कहकर ड्राइवर मुस्कराया।

दोनों दम साधकर खड़े हो गए। ट्रेन का हार्न बजते ही जैसे लाड़कुंवर के कान ही फट गए। "अरे! ये लोग कौन हैं? मैंने ऐसे लोग पहले कभी नहीं देखे" लाड़कुंवर ने हैरान होते हुए पूछा।

"ये शायद अफ्रीका के किसी देश से आए हैं", रूपाली बोली। "क्या तुम उनसे पूछ सकती हो?" लाड़कुंवर ने कहा।

रूपाली, "which country?"

यात्री, "Yes, Kenya"

रूपाली ने खुश होते हुए कहा, "देखा मैंने कहा था न। केन्या अफ्रीका में ही है।"

लाड़कुंवर ने अचरज से पूछा, "अरे! तुमने ये कैसे किया? तुम तो सबसे बात कर सकती हो...."

अगले कुछ घण्टों में उन्होंने स्टेशन पर हर चीज़ को देखा। तब तक रूपाली की ट्रेन आने का समय भी हो चला था। नानी के घर से वापिस आने के तुरन्त बाद रूपाली के पापा का ट्रान्सफर भोपाल हो गया। और रूपाली को अपना बोरिया-बिस्तर समेटकर भोपाल आना पड़ा। लगभग पन्द्रह साल बीत गए। इस बीच एक-दो बार रूपाली का टीकमगढ़ जाना तो हुआ लेकिन लाड़कुंवर से कभी मिल नहीं पाई।

फिर एक बार जब रूपाली टीकमगढ़ पहुँची तो उसने सोचा कि इस बार लाड़कुंवर से बिना मिले वापिस नहीं जाएगी। जहाँ लाड़कुंवर का घर था वह मोहल्ला इतने सालों में पूरी तरह बदल चुका था। लाड़कुंवर का वह बड़ा-सा खपरैल वाला घर और आँगन कहीं नज़र नहीं आ रहा था। मुख्य सड़क पर एक साइकिल पंचर सुधारने की दुकान पर रूपाली ने पूछा, “लाड़कुंवर... मेरा मतलब ...कुम्हारों का कोई घर है क्या यहाँ आसपास? वे दुर्गा की मूर्तियाँ भी बनाते हैं।”

दुकानदार को नहीं पता था। रूपाली वापिस लौटने लगी। तभी एक व्यक्ति अपनी गाड़ी पर उसके पीछे आया और पूछा, “सुनिए, आप रूपाली हैं ना?” “जी हाँ, आपको कैसे पता?” “मैं लाड़कुंवर का बड़ा भाई मोहन हूँ।” “अरे! मोहन भैया, लाड़कुंवर कहाँ है अब?”

“बिन्नू तो अब नहीं रही”, मोहन भैया ने बिलकुल सपाट आवाज़ में कहा।

नहीं रही का क्या मतलब है, रूपाली के पैर जैसे सड़क पर जम गए और दिमाग ने काम करना बन्द कर दिया।

“बिन्नू की शादी हुई थी दिगौड़ा में। एक बेटा भी हुआ था। फिर एक दिन दिमागी बुखार आया और अगले ही दिन चल बसी”, मोहन भैया ने बताया।

“चलिए, आप घर चलिए। उसका बेटा यहीं है अपनी नानी के पास। अभी स्कूल गया है, आता ही होगा...”

लाड़कुंवर के घर पर उसकी माँ रोते हुए और साड़ी के किनारों से आँसू पोछते हुए एक फोटो एल्बम निकाल लाईं। फोटो में बैंगनी रंग की साड़ी पहने हुए लाड़कुंवर मुस्करा रही है। रूपाली लाड़कुंवर की फोटो पर हाथ फेरती है और लाड़कुंवर उसे देखकर मुस्कराकर कहती है, “तुम तो सबसे बात कर लेती हो ना...”

फॉर्म-4 (नियम-8 देखिए)

मासिक चकमक बाल विज्ञान पत्रिका के स्वामित्व और अन्य तथ्यों के सम्बन्ध में जानकारी

प्रकाशन का स्थान : भोपाल

प्रकाशन की अवधि : मासिक

प्रकाशक का नाम : राजेश खिंदरी

राष्ट्रीयता : भारतीय

पता : एकलव्य फाउंडेशन
जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास
भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026

मुद्रक का नाम : राजेश खिंदरी

राष्ट्रीयता : भारतीय

पता : एकलव्य फाउंडेशन,
जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास,
भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026

सम्पादक का नाम : विनता विश्वनाथन

राष्ट्रीयता : भारतीय

पता : एकलव्य फाउंडेशन
जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास
भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026

उन व्यक्तियों के नाम
जिनका स्वामित्व है : रैक्स डी. रोज़ारियो

राष्ट्रीयता : भारतीय

पता : एकलव्य फाउंडेशन
जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास
भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026

मैं राजेश खिंदरी यह घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

(प्रकाशक के हस्ताक्षर) राजेश खिंदरी 25 फरवरी 2021

यह कहानी सऐश ने अपने पापा को सुनाई है और उन्होंने लिखी है।

शक्ति

इस कहानी में एक बड़ा-सा बुरा आदमी है जिसके पास कुछ विशेष शक्ति है कि वह रूप बदल सकता है। और दूसरे लोगों को बुरा भी बना सकता है।

एक बार वह भूत बन जाता है। उसे बहुत भूख लगती है। तो वह एक लड़की को पकड़कर खाना चाहता था। तभी वहाँ एक हीरो आता है जिसके पास थोड़ी-सी ताकत है। लेकिन वो बहादुर है और उसके पास एक चमत्कारी तलवार भी है।

फिर उस भूत और हीरो के बीच लड़ाई शुरू हो जाती है। दोनों अपनी-अपनी शक्ति का इस्तेमाल करते हैं। भूत एक रस्सी फेंकता है लड़की को पकड़ने के लिए। हीरो अपनी तलवार से उस रस्सी को काट देता है। लड़ाई में हार के बाद भूत भाग जाता है। लड़की उस हीरो को धन्यवाद कहती है। उसके बाद सब खुशी-खुशी रहने लगते हैं।

लेख व चित्र: सऐश गुप्ता, पहली, हैरिटेज
एक्सपीरियंसल स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

गिरने की आज़ादी

वर्षा, चौथी, शहीद स्कूल,
बीरगाँव, छत्तीसगढ़

जब मैं छोटी थी तो मुझे खेलना-कूदना बहुत अच्छा लगता था। मैं बहुत मस्ती करती थी और बहुत सुन्दर दिखती भी थी। हमारे घर में एक दीवान था जिस पर मैं दिन भर इधर-उधर हिलती-डुलती, लोटती-लुढ़कती रहती थी। एक दिन दीवान पर खेलते-खेलते मैं नीचे गिर गई। मैं रोई तो नहीं पर उस दिन के बाद से मैंने ऐसे खेलना, हिलना-डुलना, लोटना-लुढ़कना सब बन्द कर दिया। फिर मेरे पापा ने एक छोटा-सा, सुन्दर-सा, मुलायम-सा गद्दा बनाया और दीवान के बगल में ज़मीन पर रख दिया। उस दिन के बाद से मैंने फिर से खेलना, हिलना-डुलना, लोटना-लुढ़कना, मस्ती करना शुरू कर दिया। बार-बार गिरकर मुलायम गद्दे से टकराती तो और भी मज़ा आता। मैं पहले से भी ज़्यादा खुश थी। मुझे गिरने की आज़ादी जो मिल गई थी।

चित्र: सपना, बाल भवन किलकारी, पटना, बिहार

कोरोना डायरी के अंश

1.

मृगांक चमोली, तीसरी, केन्द्रीय विद्यालय, पौड़ी, उत्तराखण्ड

तो आज हमारा आइसोलेशन का आखिरी दिन है। कल से हम घर में बन्द नहीं रहेंगे। बाहर जाएँगे। मैंने सोचा था कि आज बीस रुपए की बॉल खरीदूँगा। पर मम्मा ने पैसे ले लिए। मुझे बुरा लगा।

2.

अनुभव चमोली, पाँचवीं, केन्द्रीय विद्यालय, पौड़ी, उत्तराखण्ड

हम सब कोरोना पॉज़िटिव हैं। आज हमारा आइसोलेशन का आखिरी दिन है। कल से हम सब बाहर घूमने जा सकते हैं। इन दिनों मैं अपने दोस्त के घर नहीं जा पाता था। वह भी हमारे घर नहीं आ पाता था। बहुत दिनों से कोफ्ते, पकौड़े, मझली के पकौड़े, पूरियाँ नहीं खाईं।

हमें दो आइसोलेशन किट मिलीं। उसमें मास्क, पल्स ऑक्सीमीटर, थर्मामीटर, दवाइयाँ और कैलॉन - D3 के पैकिट थे। हम गेट की तरफ भी नहीं गए। हमने बहुत सावधानियाँ बरतीं। भाप लेनी पड़ी, गरारे करने पड़े और घर के अन्दर भी फेस मास्क पहनने पड़े।

दुकान से कुछ खरीदा भी नहीं। गाड़ी में घूमने भी नहीं गए। 14-15 दिन घर पर ही रहें। बहुत परेशानियाँ हुईं। पर अब हम आम ज़िन्दगी जी सकते हैं। पर वायरस का खतरा अभी टला नहीं है।

चित्र: कल्पना कुमारी पाण्डेय, आठवीं, परिवर्तन सेंटर, सिवान, बिहार

चित्र: रूपाली, चौदह साल, मंज़िल संस्था, दिल्ली

ताकत तालीम की मुलाकात

रेशमा, स्वतंत्र तालीम, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

जब लॉकडाउन हुआ तो हम लोगों की क्लासेज़ मोबाइल पर होने लगीं। यह हम सबके लिए नया अनुभव था। भैया और दीदी हमें व्हॉट्सऐप पर क्लासेज़ देने लगे। और हम सब अपने जवाब लिखकर उसकी फोटो खींचकर भेजते थे। कभी-कभी क्लासेज़ ऐसी होती थीं जहाँ भैया-दादी हमें बताते थे कि कौन-से सवाल कितने नम्बर के हैं और कहते थे कि हम ईमानदारी से अपने जवाब चैक करें और खुद को सही मार्क्स दें।

कभी-कभी तो सही मार्क्स देते। पर ऐसा भी हुआ कभी कि हमने खुद को बढ़ा-चढ़ाकर नम्बर दिए जिससे कि हम जीत जाएँ या सबसे ज़्यादा नम्बर पाएँ। और एक दिन भैया ने हमारी चीटिंग पकड़ ली। हमें जिस दिन पता चला कि भैया लोग कॉपी रोज़ाना चैक करते हैं तो खुद में बड़ा अफसोस हुआ और फिर वो सारे मार्क्स भी बुरे लगने लगे।

वह दिन है और आज का दिन है, हमने कभी क्लास में चीटिंग नहीं की और सोच लिया कि अब ऐसा करेंगे ही नहीं कि चीटिंग करने या कुछ छिपाने की ज़रूरत पड़े।

मेरा पन्ना

मेरा पन्ना

चित्र: तृषा राजहंस, पाँचवीं, सेंट नॉर्बर्ट स्कूल, इन्दौर, मध्य प्रदेश

बड़ी मुश्किल है...

किरन, नौवीं, दीपालया कम्युनिटी लाइब्रेरी, गोलाकुआँ, दिल्ली

हाय! मेरा नाम किरन है। मेरे परिवार में 5 सदस्य हैं। मैं, मेरे मम्मी-पापा और मेरे दो भाई। मेरे पापा एक खाना बनाने वाली प्राइवेट कम्पनी में काम करते हैं। मार्च 2020 तक तो सब कुछ सही चल रहा था। फिर अचानक लॉकडाउन लग गया। और ज़ाहिर-सी बात है पापा का काम भी बन्द हो गया।

दो महीने हम दिल्ली में ही रहे। फिर जैसे-तैसे पापा ने कहीं से पैसे का इन्तज़ाम किया और हम गाँव के लिए रवाना हो गए। सच कहूँ तो मुझे तो खुशी हो रही थी कि मैं अपने दादा से मिलने जा रही हूँ। पर अन्दर से बुरा भी लग रहा था पापा को देखकर कि कैसे अब वो एक-एक पैसे का हिसाब रख रहे थे। गाँव पहुँचने के बाद वहाँ पैसों की और दिक्कत आ गई क्योंकि बरसात का मौसम था और हमें धान भी रोपना था। और ऊपर से स्कूल एडमिशन की आखिरी तारीख आ चुकी थी।

इस बार मेरे दोनों भैया को ग्यारहवीं में एडमिशन करवाना था। और फिर ट्यूशन, किताबों का भी बहुत खर्चा था। धीरे-धीरे पापा की सेविंग्स खतम होती जा रही थीं। इन दिनों टमाटर और आलू भी बहुत महँगे हो गए थे। आलू तो नसीब हो जाता पर हमें बिना टमाटर के ही सब्ज़ी खानी होती। छह महीने बीत चुके थे और अब घर बैठकर खाना मुश्किल-सा हो गया था। इसलिए हम दिल्ली आ गए।

बहुत-सी कम्पनियाँ खुल गई थीं। पर पापा का काम अभी बन्द था। पापा एक महीने तक काम ढूँढ़ते रहे। पर काम नहीं मिला। अन्त में पापा ने लेबर का काम करना शुरू किया। अब तक हमने एक महीने का किराया भी नहीं दिया था। बहुत ज़्यादा बोलने के बाद मकान मालिक ने बस एक महीने का किराया माफ किया। हम इसके खिलाफ भी नहीं जा सकते थे क्योंकि इतनी मेहरबानी है कि वो हमें रहने दे रहे थे।

मैं उनकी जगह होती तो सारे महीनों का किराया माफ कर देती क्योंकि मेरे पास इन्कम के दूसरे सोर्स तो होते। पर अफसोस सब लोग ऐसा नहीं सोचते। हमारी पढ़ाई अब अच्छी चल रही है पर पापा अभी भी पैसे को लेकर परेशान रहते हैं।

माथापच्ची

1. दो अंकों की एक संख्या है जिसके दोनों अंक समान है। दोनों अंकों को मिलाकर 12 का आधा होता है। बता सकते हो कि यह कौन-सी संख्या है?

(यह सवाल रॉयल कॉन्कार्ड इंटरनेशनल स्कूल, बेंगलूरु, कक्षा चौथी की छात्रा उन्नति ने भेजा है।)

2. इन तीलियों को तोड़े-मोड़े बिना क्या तुम 9 अंक बना सकते हो?

3. एक फोटो को देखते हुए अर्शी बोली, “यह मेरे पापा की बेटी की फोटो है। पर मेरी कोई बहन नहीं है।” अर्शी झूठ नहीं बोल रही थी। तो फिर अर्शी किसकी फोटो देख रही थी?

4. राशि के पास 50 कुकीज़ हैं। उनमें से 25 कुकीज़ के अन्दर चॉकलेट भरी हुई है, 20 के अन्दर केरेमल भरा हुई है। और 10 के अन्दर चॉकलेट और केरेमल दोनों भरे हैं। बाकी की कुकीज़ सादी हैं यानी उनके अन्दर कुछ भी भरा नहीं है। ज़रा बताओ तो कि कितनी कुकीज़ सादी हैं?

5. नीचे दिए गए वाक्यों में कुछ सब्ज़ियों के नाम छिपे हैं। ढूँढ़कर बताओ।

- शनि ग्रह पर वलय होते हैं।
- हादसे के समय दीपक टहल रहा था।
- रूपा लकड़ी के बहुत सुन्दर खिलौने बनाती है।
- तुअर बीज बोने का सही समय क्या है?
- अर्शी के जन्मदिन में कुशल जमकर नाचा।

6. प्रश्न वाली जगह में कौन-सी संख्या आएगी?

4 3 2

5 3 5 1 1

6 1 2 8 3 3 1

7 2 8 4 3

9 ? 3

7. एक अस्पताल में 16 मरीज भर्ती हैं। 13 नम्बर बेड का मरीज़ ठीक हो गया है। वह हॉस्पिटल से घर जाते समय सभी मरीज़ों से मिलकर जाना चाहता है। लेकिन शर्त यह है कि वह किसी भी मरीज़ के कमरे मे एक ही बार जा सकता है। तो बताओ, वह किस क्रम में सबसे मिलकर बाहर जा सकता है?

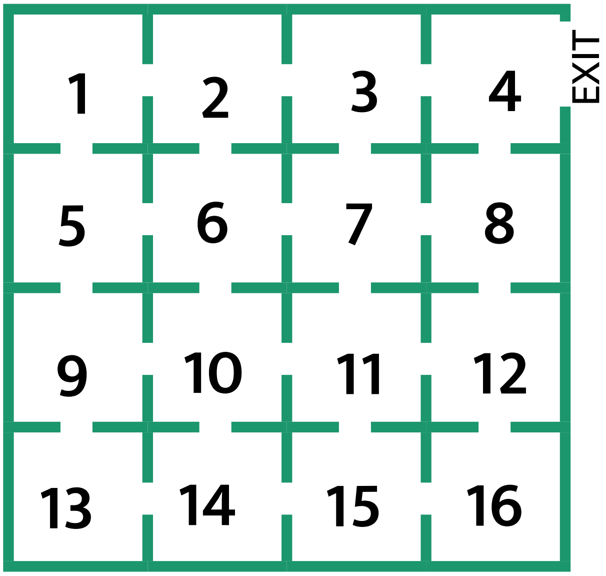

8. एक रात बारह बजे एक शहर में एक स्कूल, एक मन्दिर और एक अस्पताल में आग लग गई। बताओ फायर ब्रिगेड आग बुझाने सबसे पहले कहाँ जाएगी?

9. माया की मम्मी की चार बेटियाँ हैं - मिनी, मीनू, मीना। चौथी बेटी का नाम क्या होगा?

10. रेहान ने अपनी अलमारी में 12 सफेद और 12 काले मोज़े रखे हैं। यदि कमरे में पूरा अँधेरा हो तो उसे कम से कम कितने मोज़े उठाना चाहिए कि उसे एक जोड़ी मोज़े मिल जाएँ?

फटाफट बताओ

मुझे ऊँची-सी इमारत से नीचे फेंक दो तो भी मैं सही-सलामत रहूँगा, पर पानी में फेंक दो तो खतम हो जाऊँगा। बताओ मैं कौन हूँ?

(ह्ाग़क)

क्या है जिसके पास बहुत सारे शब्द हैं लेकिन फिर भी वह बोल नहीं सकती?

(ह्ाकी)

दो अक्षर का मेरा नाम
सिर को ढँकना मेरा काम

(ग्गिऽ)

एक खेत में ऐसा हुआ
आधा बगुला, आधा सुआ

(ाक्ष़)

सीधा होकर महँगा कहाऊँ
उलटा होकर चलता जाऊँ

(ाणड़)

हवा लगे सो मर जाऊँ
धूप लगे सो जी जाऊँ

(ानीन्ष)

क्या है जो दिन-रात चलती रहती है,
फिर भी अपनी जगह पर ही रहती है?

(ड़िड)

■	1	■	2		3	■	4	
5		■		■	6			■
	■	7		8	■	■	9	
10			■	11		12	■	■
■	■	13	14		■	15		16
17	18	■		■	19		■	
■	20			■		■	21	
22		■	■	23		24	■	
	■	25			■	26		■

● बाएँ से दाएँ

● ऊपर से नीचे

चित्र पहेली

डिज़ाइन: इशिता देबनाथ बिस्वास

सुडोकू-40

		2	3					5
	5		6	2	9			
	3		5		4	6		
4	1	3			6			2
	8	7	4		5	9		1
	6	5	2	1				3
3				6		2	5	
	4	6	9	5				7
					3	8		6

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है न? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए न जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा न आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।

माथापच्ची जवाब

1. 33

2.

3. खुद की।

4. चॉकलेट भरी कुकीज़ = 25
केरेमल भरी कुकीज़ = 20
चॉकलेट और केरेमल दोनों भरी कुकीज़ = 10
इसलिए सिर्फ चॉकलेट भरी कुकीज़ = 25 - 10 = 15
और सिर्फ केरेमल भरी कुकीज़ = 20 - 10 = 10
सादी कुकीज़ = 50 - (15+10+10)
= 50 - 45 = 5

5. शनि ग्रह पर वलय होते हैं।
हादसे के समय दीपक टहल रहा था।
रूपा लकड़ी के बहुत सुन्दर खिलौने बनाती है।
तुअर बीज बोने का सही समय क्या है?
अर्शी की जन्मदिन पार्टी में कुशल जमकर नाचा।

6. ध्यान से देखो तो अगल-बगल वाली संख्याओं के योगफल को 2 से भाग करने पर बीच वाली संख्या प्राप्त होती है। इसलिए प्रश्न वाली जगह में 6 आएगा।

7. 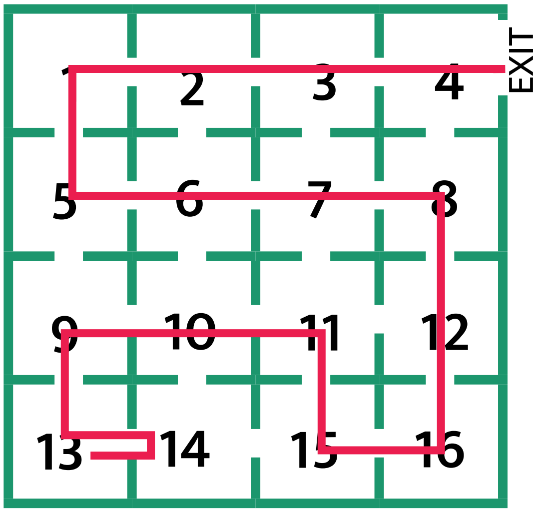

8. चूँकि रात का समय है इसलिए स्कूल और मन्दिर में या तो लोग नहीं होंगे या बहुत ही कम लोग होंगे। इसलिए फायर ब्रिगेड को सबसे पहले अस्पताल जाना चाहिए।

9. माया

10. 3 मोज़े। चूँकि मोज़ों में दायाँ-बायाँ नहीं होता इसलिए 3 मोज़े निकालने पर एक ही रंग के दो मोज़े ज़रूर होंगे।

फरवरी की चित्रपहेली का जवाब

	1 पे	ठा		2 ब	3 गु	ला		4 इ
5 नी	ड़		6 टो		ल		7 चि	त्र
ल			8 क	रौं	दा		ड़ि	
9 गि	ल	10 ह	री		11 न	12 दि	या	
री		वे		13 टॉ		ल		14 घ
	15 का	ली	16 मि	र्च			17 ख	ड़ी
	री		नि		18 पा	इ	प	
19 बा	ग		20 ट	21 ह	नी		22 रै	23 ली
	24 र	स्सी		त्था		25 डो	ल	ची

सुडोकू-39 का जवाब

5	1	8	2	7	6	9	3	4
3	2	6	9	4	1	5	8	7
7	4	9	8	5	3	1	2	6
2	5	3	4	6	7	8	1	9
4	8	1	3	9	5	6	7	2
6	9	7	1	8	2	4	5	3
8	6	2	7	1	9	3	4	5
1	3	5	6	2	4	7	9	8
9	7	4	5	3	8	2	6	1

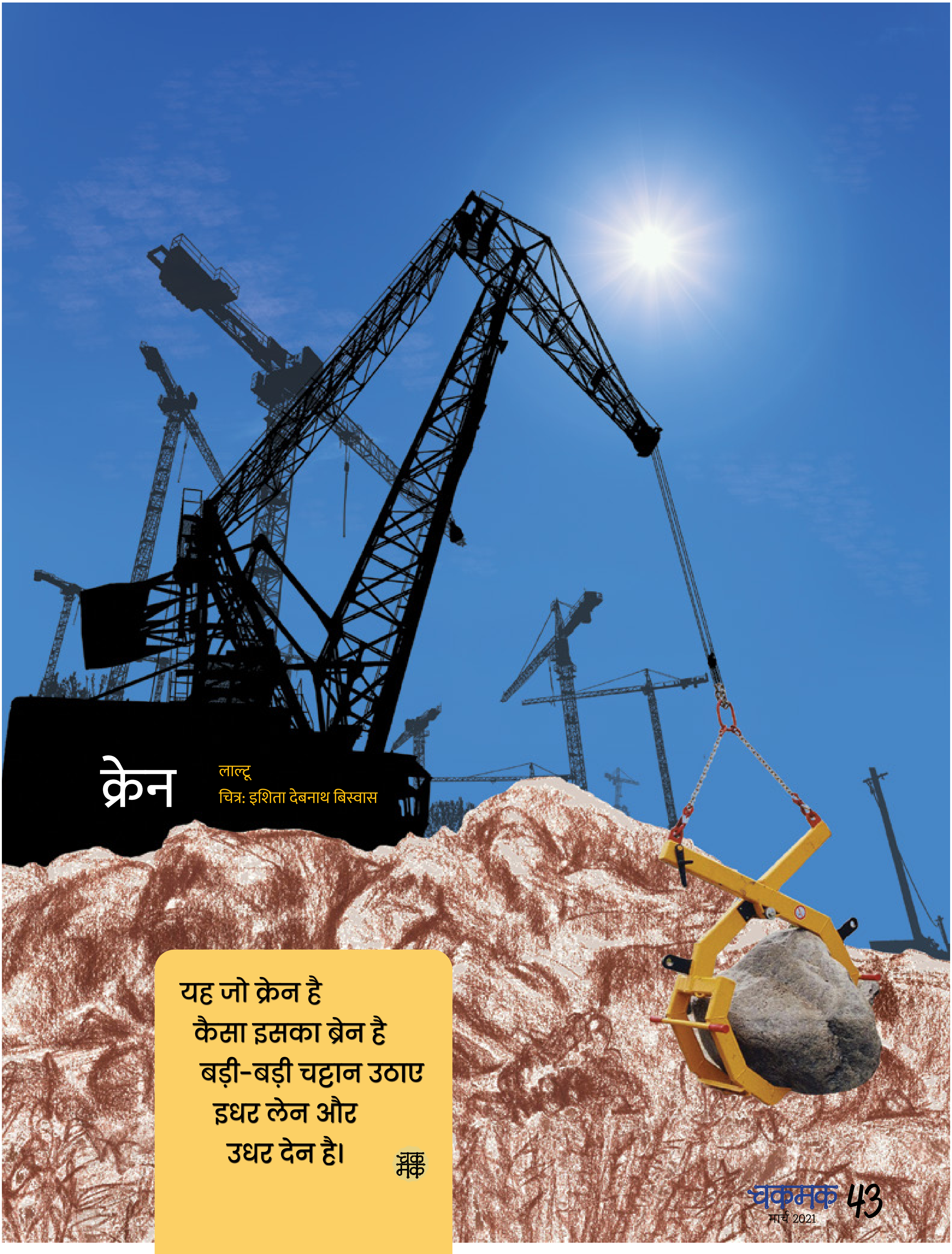

क्रेन

लाल्टू

चित्र: इशिता देबनाथ बिस्वास

यह जो क्रेन है
कैसा इसका ब्रेन है
बड़ी-बड़ी चट्टान उठाए
इधर लेन और
उधर देन है।

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23

रीटा

रोहन चक्रवर्ती

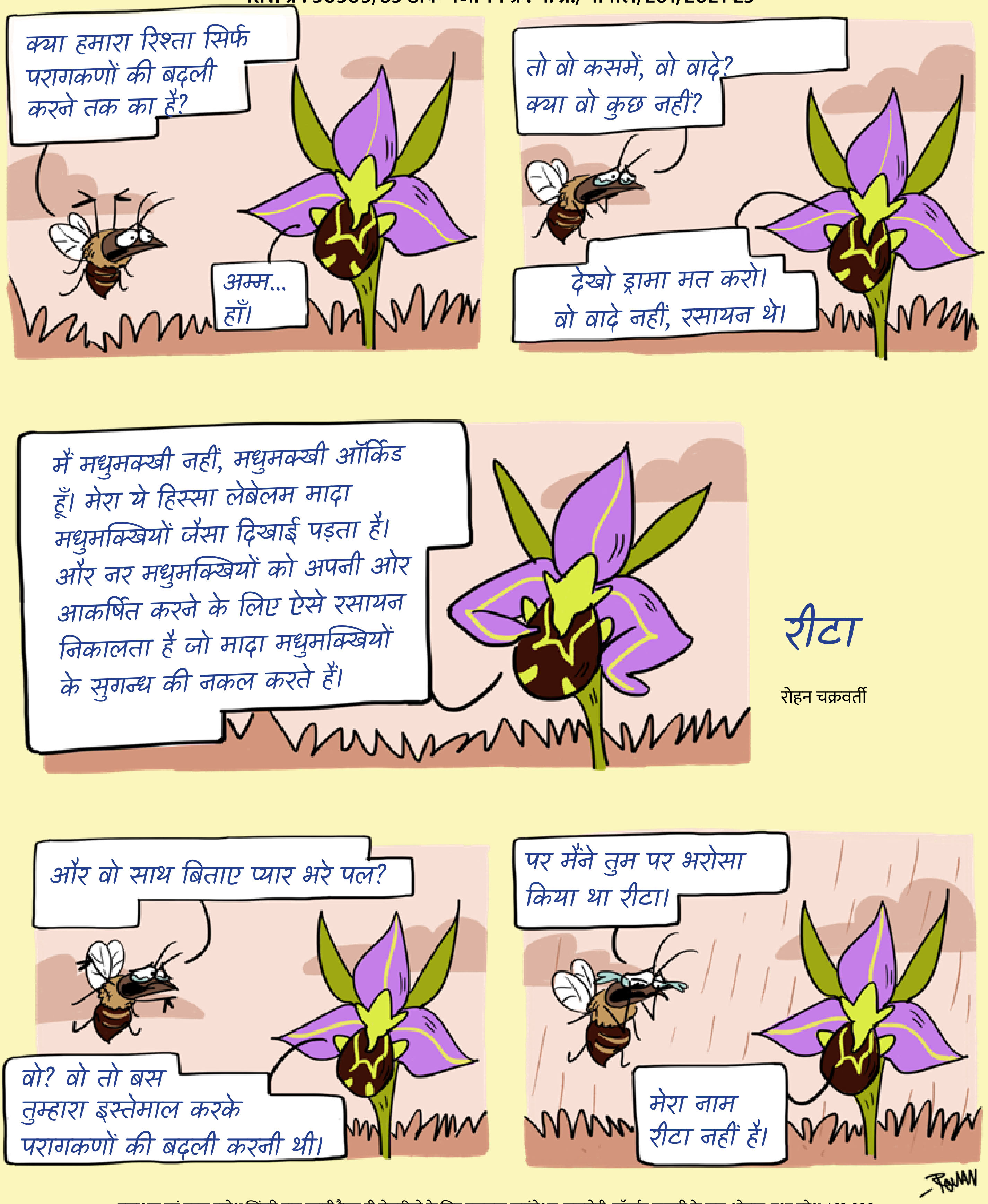

प्रकाशक एवं मुद्रक राजेश खिंदरी द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026 से प्रकाशित एवं आर के सिक्युप्रिन्ट प्रा लि प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन